कविता : किशोरीरमण टंडन

छाया : के. चक्रवर्ती

कुछ अटपटे कुछ चटपटे

सुदर्शनकुमार बजाज, अल्मोड़ा :

क्या कारण है कि मच्छर अंधेरेमें भी आदमीको ढूंढ़ लेते हैं?

खाद्य-आकर्षण इसको कहते हैं!

सतीशचंद्र झा, कानपुर :

आपको मालूम है कि यदि लोकसभामें बच्चोंका बहुमत हो, तो आपकी दाढ़ी व मूछों की क्या हालत होगी?

अगर उस बहुमतमें नाइयोंके बच्चे न हुए, तो हमें कोई खतरा नहीं!

शांतिलाल पूरनचंद मल्होत्रा, अकोला :

मोटी अकलको छोटी खोपड़ीमें देखकर लोग क्या सोचेंगे?

लोटेमें जिन्न!

निरंजनप्रसाद कांसकार, दरभंगा :

अगर आपको मुख्य मंत्रीका पद और मुख्य मंत्रीजीको आपका पद मिल जाए, तो क्या होगा?

दोनोंका बटाधार!

★ **प्रवीणकुमार श्रीवास्तव, द्वारा श्री महावीर प्रसाद श्रीवास्तव, बंगला नं. १, रेजीडेंसी रोड, इन्दौर :**

विश्वके सभी बड़े नेताओंका कहना है कि सबको आपसमें मिलजुलकर कार्य करना चाहिए, फिर भी लोग हमें हमारी वार्षिक परीक्षामें दूसरे विद्यार्थीकी मदद नहीं लेने देते—क्या कारण है?

कारण स्पष्ट है, कि कहीं दूसरे विद्यार्थी तुम्हारी मदद लेकर फेल न हो जाएं!

बलराजकुमार, ऊधमपुर :

मैं आपकी दाढ़ीमें जुओंका 'बोर्डिंग हाउस' कायम करना चाहता हूं। क्या आप इसकी इजाजत देंगे?

मगर यहां पहले ही से जुओंका 'मर्डर हाउस' बना हुआ है!

सतीशचंद्र बोहरा, बीकानेर :

मेंढकीको जुकाम कब होता है?

सूरोंमें नाल जड़वाते समय!

जगदीश निहालाणी, उल्लासनगर नं. ४ (जिला—थाना) :

यदि बीमार मनुष्य डाक्टरको देखकर हंसने लगे, तो क्या समझना चाहिए?

कि उसने डाक्टरका पहला बिल अदा नहीं किया!

बैकुण्ठ भार्गव, इलाहाबाद :

अतिथिके आनेपर तो उसका स्वागत करते हैं, पर गुस्सेके आनेपर क्या करें?

उसे फौरन एक बाल्टी ठंडे पानीसे नहलाओ!

आर्यरत्न व्यास 'आर्य', बबीना कैण्ट, झांसी :

मान लीजिए कि आपकी कलई एक दिन खुल जाती है कि आपके न दाढ़ी है न मूंछें, तब आप क्या करेंगे?

जो बच्चे कलई खोलेंगे, उनकी कल्पना-शक्तिपर हमें संदेह होने लगेगा!

श्रीनिवास कुलकर्णी, माउण्ट आबू :

घरमें मक्खियां आने लगें, तो फ्लिटसे भगा देते हैं। अगर घरमें ज्यादा महमान आने लगें, तो?

अभी तक कोई मेहमानबार फ्लिट तो आविष्कृत नहीं हुई—लेकिन भोजन सामग्री यदि स्वादिष्ट और आकर्षक न हो, तो मेहमानोंके आनेपर भी रोक लग सकती है!

हरविन्द्र कौर, कलसी, मुरादाबाद :

बच्चे तो सब बच्चे ही होते हैं, पर पशुओं के बच्चे पैदा होते ही क्यों चलने लगते हैं, मनुष्यों के क्यों नहीं?

पैरोंसे ज्यादा मनुष्यकी बुद्धि चलती है। यही कारण है कि मनुष्यके बच्चे पैदा होते ही अपना सबसे पहला हथियार (रुदन अस्त्र) चलाते हैं!

अरुणकुमार टोडानी, रानीगंज (बर्दवान) :

आपकी दाढ़ी ज्यादा लोकप्रिय है या 'पराग?'

'पराग' के अक्षर ही हमारी दाढ़ीके बाल हैं!

रेखा मित्तल, कुरुक्षेत्र :

मनके अंधेरे और रातके अंधेरेमें क्या अंतर है?

मनका अंधेरा सत्संगसे दूर होता है, रातका अंधेरा बिजली या मिट्टीके तेलकी शक्तिसे!

बच्चों के अटपटे प्रश्नोंके चटपटे उत्तर हम इस स्तंभ में छापते हैं। जिनके प्रश्न अधिक अटपटे होंगे, उन्हें सुंदर-से पुरस्कार मिलेंगे। जिन्हें पुरस्कार मिले हैं, उनके नामके पहले ★ का निशान लगा है। प्रश्न कार्डपर भेजो और एक बारमें तीनसे ज्यादा मत भेजो। पता याद कर लो : **संपादक, 'पराग (अटपटे-चटपटे)', पो. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई-१।**

भोजराज मंधानी, भाटापारा (जिला रायपुर) :

अंग्रेज तो चले गए, पर अंग्रेजी कब जाएगी?

जब अधिकतर देशवासियोंको अंग्रेजीकी बनिस्बत हिन्दी अधिक लाभदायक प्रतीत होगी!

राकेश शर्मा, जयपुर :

मनुष्यकी बुद्धि और बंदरकी बुद्धिमें क्या अंतर है?

मनुष्य अकलमें विश्वास रखता है, बंदर नकलमें!

विनोदकुमार कट्याल, रोहतक :

अगर इस दुनियामें सारे मनुष्य ईमानदार हो जाएं, तो क्या होगा?

चमत्कार!

विजयकुमार गुप्ता, खंडवा :

रामकी रावणसे लड़ाई हुई थी और कृष्ण की कंससे अर्थात् दोनोंके नाममें शुरूके अक्षर एकसे हैं। तो, दादा, क्या आपकी दारासिंहसे कुश्ती होगी?

यद्यपि इस प्रश्नसे हमारे सुकोमल शरीरके प्रति कोई शुभकामना प्रकट नहीं होती, फिर भी यदि कुश्तीका अखाड़ा संपादककी मेजपर रहा, तो दारासिंह कुश्तीसे इनकार कर देगा!

सुरेश प्रेमदास बोकडे, सौंसर :

आपकी प्रिय दाढ़ी कब तक जमीन साफ करने लगेगी?

आह! संपादककी कैंची—उसे भूल गए?!

नन्दलाल पंजवानी, कानपुर-१२ :

प्रायः एक विद्वान दूसरे विद्वानसे ईर्ष्या करता है, किंतु चोर चोरसे दोस्ती करता है, क्यों?

क्योंकि विद्वान प्रसिद्धि चाहता है और चोर माल सिद्धि!

श्यामलाल बघेल, पचोखरा, दतिया :

गधेकी पूंछ तथा मनुष्यकी मूंछमें अंतर?

गधेकी पूंछमें दूध नहीं लगता!

★ हरदेव सरल, बाजार गोविन्दगढ़, हिसार (पंजाब) :

मैं संसारका सबसे बड़ा मूर्ख बनना चाहता हूं। इसके लिए मुझे क्या करना होगा?

अपने आपको सबसे बड़ा बुद्धिमान समझना होगा!

श्रीनिवास शर्मा, चिरावा :

मित्र तथा दुश्मनमें कितना अंतर है?

जितना दांत और जीभमें!

कै. दौ. मदान, बार्शी :

कहावत है 'उंगली पकड़कर पहुंचा पकड़ लेना', तो हम आपकी दाढ़ी पकड़कर क्या पकड़ें?

हमारे दांत तुम्हारी उंगली पकड़ लेंगे!

एच. एस. सलूजा, अतरौली :

डंडा अस्त्र है या शस्त्र?

है तो शस्त्र, परंतु समयपर ब्रह्मास्त्रका काम भी देता है!

जुगलकिशोर ब. टाक, नागौर :

क्यों न कागज काले और स्याही सफेद होने लगे?

अगर तुम अपनी बनाई गई किसी सफेद स्याहीका विज्ञापन करना चाहते हो, तो हमारे विज्ञापन विभाग को लिखो!

प्रवेशकुमार सरना, शिवनी :

यदि पृथ्वी विपरीत दिशामें होती, तो?

इसके लिए सिद्ध करना होगा कि वह अभी विपरीत दिशामें नहीं है!

प्रवीणकुमार तिवारी 'दीवाना', लखनऊ :

मनुष्य सबसे जीतकर भी परिस्थितिसे क्यों हार जाता है?

क्योंकि वह कभी कभी परिस्थिति बनानेकी ओर कम और उससे ग्रस्त होनेकी ओर ज्यादा ध्यान देने लगता है!

राधारानी महेश्वरी, खुर्जा :

नन्हे-मुन्ने बच्चे दाढ़ीवालेके नामसे ही डरते हैं, पर जरा बताइए तो, वे अपने दाढ़ीवाले दादा और उनके 'पराग' से क्यों नहीं डरते?

क्योंकि हमने देखभालकर काफी मुलायम दाढ़ी खरीदी थी!

प्रबोध बंसल, गाजियाबाद :

घड़ी रुक जाती है, पर समय क्यों नहीं रुकता?

क्योंकि घड़ीमें चाबी लगती है, समयमें नहीं!

कहानी

मछोरिन का लोभ

• सुशीला ठाकुर

बात उन दिनोंकी है जब समुद्रमें जल-परियां रहा करती थीं। वे अपने मणि-रत्नवाले पंखोंसे नीले जलको चीरती हुई तैरती रहती थीं। तब समुद्रमें जल-देवता वरुण भी रहते थे। उनका शीशमहल हीरे-मोतीसे सजा हुआ था। समुद्रमें रहने वाली जल-परियां, वरुण और उनकी रानी—सभी बड़े प्रसन्न और सुखी थे।

समुद्रसे कुछ दूर हटकर मछुवोंकी झोपड़ियां थीं। उनमें धीर चारु नामका एक मछुवा अपनी पत्नीके साथ रहता था। धीर चारु बड़ा संतोषी जीव था। वह दिन भर मछलियां पकड़ कर शामको उन्हें हाटमें बेच आता और जो कुछ मिलता, उससे अपना जीवन-निर्वाह करता। कभी कभी वह एक भी मछली न पकड़ पाता और उस दिन उसे भूखे ही सोना पड़ता। फिर भी उसे कोई दुःख न होता, क्योंकि सभी मछुवोंके साथ ऐसा ही होता था।

लेकिन उसकी पत्नी कामना बड़ी लोभी थी। वह अपने पतिका तिरस्कार करती रहती और उसके सामने अपनी नई नई मांगें रखती। बेचारा धीर चारु अपनी तरफसे कामनाको खुश करनेकी पूरी कोशिश करता, लेकिन फिर भी उसका असंतोष बना ही रहता।

उन दिनों बड़े जोरोंकी बरसात हो रही थी।

पिछले तीन-चार दिनोंसे धीर चारुको एक भी मछली नहीं मिल सकी थी। उसके घरमें चूल्हा न जल सका था। उसकी पत्नीका भूखके मारे बुरा हाल था। उसने तेज बारिशमें ही धीर चारुको बाहर धकेल दिया और कहा, "आज कहींसे भी कुछ लेकर आओ। मुझसे और भूख नहीं सही जाती।"

धीर चारु कहां जाता। किसी पड़ोसीसे उधार मिलनेकी आशा नहीं थी। हारकर उसने मछली पकड़नेका कांटा उठाया और समुद्रकी ओर चल दिया। लेकिन उसे पूरा विश्वास था कि इतनी तेज बरसातमें समुद्रके किनारे बैठ कर मछली नहीं पकड़ी जा सकती। काश, इस इस समय उसके पास एक नाव होती! लेकिन नावकी बात तो दूर, मछली पकड़नेका कांटा भी उसके पास पुराना ही था।

एक चट्टानपर बैठकर उसने वरुण देवता का नाम लिया और कांटा पानीमें डाल दिया। किनारे पर बैठा बैठा वह दुआ मनाता रहा कि आज किसी भी प्रकार कोई मछली फंस जाए, नहीं तो कामना उसे घरमें नहीं घुसने देगी।

धीर चारु बहुत देर तक पानीमें कांटा डाले सोचता रहा, लेकिन कोई मछली आकर नहीं फंसी। अब धीरे धीरे वह निराश होने लगा और सोचने लगा कि पत्नीसे जाकर वह क्या कहेगा। लेकिन तभी उसे कांटेमें कोई चीज अटकती हुई-सी महसूस हुई। उसने बंसीको खींचना चाहा लेकिन वह बहुत भारी लगी। धीर चारुने सोचा अवश्य ही कोई बड़ी मछली फंस गई है।

उसने बड़ा जोर लगाकर बंसीको किनारे की तरफ खींचा। और जब कांटेमें उलझी हुई चीज ऊपर उठी, तो आश्चर्यसे वह लगभग चीख उठा। वह एक सुंदर देवी थी।

देवीने बड़ी विनती भरे शब्दोंमें कहा, "मछुवे, मुझे छोड़ दे। मैं जल-देवता वरुणकी पत्नी हूं। मैं तुम्हारी हर इच्छा पूरी कर दूंगी। इस चट्टानपर खड़े होकर जब तुम मुझे आवाज दोगे, मैं चली आऊंगी।"

धीर चारु एक क्षणके लिए तो हक्का-बक्का रह गया। लेकिन दूसरे ही क्षण वह होशमें आ गया और बोला, "हे जल-देवी, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूं। मैं तुम्हें अभी मुक्त किए देता हूं, लेकिन मेरी पत्नी पिछले तीन-चार दिनोंसे भूखी है, मुझे एक मछली मिलनी चाहिए।"

देवीने कहा, "ऐसा ही होगा," और मुक्त होकर गहरे जलमें खो गई। दूसरे ही क्षण चार जलपरियां सोनेकी छबड़ियोंमें एक एक सुंदर मछली लेकर आईं और मछुवेसे बोलीं, "जल-देवीने तुम्हारे लिए ये मछलियां भेजी हैं।"

धीर चारु मछलियां लेकर खुशी खुशी घर लौट आया। कामना मछलियां पाकर बहुत खुश हुई। उसने उनका बहुत स्वादिष्ट भोजन बनाया।

खाना खाते समय मछुवेने अपनी पत्नीको

सारी कहानी सुनाई। कामनाने एक क्षणके लिए सोचा, फिर उलाहनेसे बोली, "तुम निरे बुद्धू हो। तभी तो जलदेवीसे सिर्फ मछलियां मांगकर रह गए। देखते नहीं, हमारी झोंपड़ी कितनी सड़ी-गली और पुरानी है। वह तो सब कुछ कर सकती हैं। कल सवेरे जाकर उनसे एक अच्छा मकान मांग लाओ।"

धीर चारुको यह कुछ अच्छा नहीं लगा। लेकिन उसके मनमें कामनाका डर समाया हुआ था, सो वह दूसरे दिन सवेरे उठकर समुद्रकी ओर चल दिया।

चट्टान पर खड़े होकर उसने जलदेवीको आवाज दी। पास ही नीले जलमें कुछ बुलबुले उठे और जलदेवीने अपना सिर निकालकर ऊपर देखा—सामने चट्टान पर मछुवा खड़ा था।

उसके उदास चेहरेको देखकर जलदेवीने पूछा, "मछुवे, कहो, अब क्यों आए हो?"

धीर चारु बोला, "देवी, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूं। बात यह है कि मेरी झोंपड़ी बहुत पुरानी है और गल-सड़ गई है। मेरी पत्नी चाहती है कि हमारे पास रहनेके लिए एक अच्छा-सा मकान हो।"

"ऐसा ही होगा," कहकर देवी अन्तर्द्धान हो गई और मछुवा अपने घरकी ओर लौट चला।

लेकिन उसके आश्चर्यका ठिकाना न रहा, जब उसने अपनी झोंपड़ीकी जगह एक सुंदर नया मकान बना हुआ देखा। उसने देखा कि उसके मकानके बाहर एक छोटा-सा बाग है और कामना एक डलियामें फूल चुन रही है। उसने रेशमी कपड़े पहन रखे हैं और वह बहुत खुश नजर आ रही है।

घर आकर उसने अपनी पत्नीसे कहा, "कामना, देख हम कितने भाग्यवान हैं! देवीने हमें कितना अच्छा मकान दिया है! अब हमारे दिन चैनसे कटेंगे।"

"हां, सचमुच यह अच्छा हुआ, जो देवी हमारे वशमें हो गई हैं।"

"अब हमें और कुछ नहीं चाहिए," मछुवा बोला।

"इसके विषयमें कल सोचेंगे," कामनाने कहा और अपने घरको सजावटमें लग गई।

दूसरे दिन कामना चौपर उदास बैठी थी। मछुवेके पूछनेपर वह बोली, "रात भर मुझे नींद नहीं आई। भला इतने छोटे-से घरमें हम कैसे रह सकते हैं! तुम जलदेवीके पास जाकर उससे एक महल मांग लाओ।"

मछुवा यह सुनकर चिंतित हो गया। कुछ देर चुप रहकर वह बोला, "देख, कामना, हमारे

दुबली-पतली परेशानियां—

अरे भई, हमें भी बिठा लो, चलते चलते पैर थक गए हैं!

वाह! क्या सवारी है! मजा आ गया!

प्रशान्त कुमार ७ब

पास छोटी-सी झोंपड़ी थी। देवीने हमको इतना अच्छा मकान दे दिया। यह हमारे लिए काफी है। अब उससे और कुछ मांगूगा, तो वह नाराज हो जाएगी।"

"और अगर तुमने कुछ नहीं मांगा, तो मैं तुमसे नाराज हो जाऊंगी। मैं तुम्हारी पत्नी हूं। तुम्हें मुझे खुश करनेके लिए मेरी हर बात माननी चाहिए।"

निराश मछुवा फिर समुद्रकी ओर गया। चट्टान पर खड़े होकर उसने फिर देवीको पुकारा। नीले जलके बुलबुलोंके बीचमेंसे जल-देवीने अपना सिर निकालकर पूछा, "मछुवे, अब तुम क्यों आए हो?"

मछुवा बोला, "देवी, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूं। मैं तुम्हारे दानसे संतुष्ट हूं। लेकिन मेरी पत्नी चाहती है कि हमारे पास रहनेके लिए एक महल होना चाहिए।"

"ऐसा ही होगा," कहकर देवी जलमें खो गई।

धीर चारुके घर लौटते लौटते आकाशमें मेघ उमड़ आए थे। मौसम बिगड़ने लगा था। अपने मकानके निकट आकर उसने देखा कि वहांसे उसका घर गायब है और उसके स्थान पर एक बड़ा महल खड़ा है।

धीर चारुने मन ही मन देवीके सामने सिर झुका लिया। महलमें उसकी पत्नी कामना अपने अभिमानमें फूली बैठी थी।

दूसरे दिन उसने अपने पतिसे कहा, "महल में रहनेके लिए यह जरूरी है कि कि हम रानी बनें। जाओ, जाकर कहो कि हम मछुवारे समाज की रानी बनना चाहती हैं।"

बेचारा मछुवा फिर देवीके पास गया और कामनाके लिए वरदान लेकर लौट आया। घर आकर उसने देखा कि महलमें जगह जगहपर पहरेदार खड़े हैं और उसकी मलेरिन हीरे-मोती-जड़े सिंहासनपर गर्वसे तनी बैठी है।

वह उसके सामने जाकर बोला, "कामना अब तो तुम खुश हो?"

रानी बनी हुई कामनाने मछुवेको फट-कार बताई। वह बोली, "तुम्हें रानीके साथ उचित व्यवहार करना आना चाहिए।"

मछुवेने झुककर उसे प्रणाम किया। लेकिन मन ही मन वह तिलमिला उठा।

दूसरे दिन रानीने उससे कहा, "हम रानी पदसे ऊब गए हैं। हम महारानी बनना चाहते हैं। जलदेवीके पास जाकर हमारे लिए महा-रानी बननेका वरदान ले आओ।" मछुवेने जानेसे मना कर दिया।

तब रानीने गरजकर कहा, "तुम्हारी यह हिम्मत कि तुम रानीकी आज्ञा न मानो। हम तुम्हें ऐसा करनेकी आज्ञा देते हैं। जाओ, अभी जाओ।"

बेचारा धीर चारु समुद्रके किनारे की ओर चल दिया।

उस दिन आकाशमें काली काली घटाएं घिर आई थीं। लगता था तूफान आएगा।

मछुवेने सागरके किनारे खड़े होकर जलदेवी को पुकारा। कुछ देरके बाद जलदेवी ऊपर आई।

और इस बार भी उसकी इच्छा पूरी कर दी गई।

लेकिन मछुवेके मनमें अपनी पत्नीके प्रति एक क्रोधकी भावना पैदा हो चुकी थी।

महारानी बनकर कामनाका दिमाग और भी चढ़ गया।

(शेष पृष्ठ ४७ पर)

—मेहताब किरण

हाय री तकदीर! किसे पता था कि चढ़ाईपर धक्के भी लगाने पड़ेंगे!

खिलौनोंकी दुनिया

छाया : राज

बड़े आदमियोंकी बनिस्बत बच्चे कदमें छोटे होते हैं। एक दिन चौराहेपर खड़े होकर हमने यह बात बड़े ध्यानसे नोट की। हम किसी ऐसे बच्चेकी तलाशमें थे, जो बड़े आदमियोंसे भी बड़ा हो। हमें ऐसा कोई बच्चा नहीं मिला। सब बच्चे छोटे थे। कोई एक मीटरका, कोई आधे मीटरका, तो कोई सवा मीटरका भी मिला।

अब हमने एक दूसरी तरकीब सोची। कोई ऐसा आदमी ही मिले, जो बच्चोंके कदका हो। एक मूछवाला दो बालिश्तका बौना दिखाई दिया तो जरूर, लेकिन वह हमारे साथ हमारे घर चलनेको कतई तैयार नहीं हुआ। बात यह थी कि हमारे सुपुत्र श्रीयुत नन्हेरामको एक ऐसे बूढ़े आदमीकी जरूरत थी, जिसके गालोंपर वह तमाचे लगा सकें। नन्हेरामकी उमर है कोई तीन-चार बरसकी। न जान उन्हें यह झक कैसे सवार हुई कि बूढ़े आदमियोंके गालोंपर तमाचे लगाने चाहिएं। यह बात खराब है और हमारे देशकी सभ्यताके विरुद्ध है। मगर नन्हेराम अभी सभ्यतासे कोसों दूर थे। वह कभी कभी सिर्फ बनियान पहनकर ही बड़ल्लेसे मुहल्लेमें घूमने निकल जाते थे।

कहानी
विनोदकुमार

हमने एक राह चलतेको टोका और उससे अपनी मुसीबत बयान की। वह सुनकर हंसने लगा। फिर बोला, "अरे साहब, खिलौनोंकी दुनियामें जाइए। वहां बड़े फूले फूले गालोंवाले बड़े मिलेंगे और बच्चोंसे चपत खानेपर कुछ चीं-चपर भी नहीं करेंगे।"

अब हमें ध्यान आया कि नन्हेरामकी फरमाइश कैसे पूरी की जा सकती है। वह सुबहसे फैल भरे पड़े थे कि बुड्ढा ला दो, बुड्ढा ला दो। हमें झुंझलाहट हो रही थी कि यह हमें कहानी नहीं लिखने दे रहा है। हमने पूछा, "नन्हेजी, बुड्ढे का तुम क्या करोगे?"

"चपत लगाएंगे!"

ऊपरसे श्रीमतीजी चिल्ला पड़ी थीं: "ला क्यों नहीं देते इसे एक बुड्ढा? आग लगे तुम्हारे लिखने-पढ़नेमें!"

इसके बाद हम सिरपर पैर रखकर भाग

नन्हेराम सही थे—गुड्डा गुड्डा भी होता है, बुड्ढा भी होता है!

खड़े हुए थे। अब इतनी देर बाद, चौराहेपर खड़े खड़े हमें इस भले आदमीने जब बताया कि खिलौनोंकी दुनियामें जाओ, तब हमें यह ध्यान आया कि हमारे नन्हे मियां वास्तवमें बदतमीज नहीं थे। वह गुड्डेको बड्ढा कहते थे। चाहिए था गुड्डा, मांगते थे बुड्ढा! ये नन्हे-मुन्ने शब्दोंमें किस तरह गड़बड़ कर देते हैं—भला कोई ठीक है! खैर, हम एक दुकानकी तरफ बढ़ चले, जिसमें खिलौने ही खिलौने भरे दिखाई दे रहे थे। वहां पहुंचते ही बाहरके संसारसे हमारा नाता टूट गया। जैसे किसी तिलिस्मघरमें पहुंच गए हों। दुकानदार एक पूरे परिवारसे उलझा हुआ था, जो तरह तरहके खिलौने निकलवाकर देख रहा था। इसलिए अपनी बारीकी प्रतीक्षामें हम घूम घूमकर खिलौने देखने लगे।

लेखकोंके साथ एक मुसीबत होती है कि उनका दिमाग ठिकाने नहीं रहता। जरा किसी चीजपर ध्यान जमा कि आसपासकी दुनियासे बेखबर हो गए। फिर यह तो संसार ही कल्पनाका था, दुनिया ही खिलौनोंकी थी। हर खिलौना बोलता सुनाई पड़ता था। कागजकी लुगदीसे बनी एक नर्तकी हमारा ध्यान अपनी ओर पाकर थिरकने लगी। उसने एक ही मिनिटमें मनीपुरी, भरत नाट्यम, रोक-एन-रोल सब नृत्य दिखा दिए। फिर ठहरकर बोली, "मुझे ले जाइए। आपका नन्हा-मुन्ना खुश हो जाएगा।"

बेचारी! उसे क्या पता कि घर पहुंचते ही चपत खाने पड़ेंगे, क्योंकि आज नन्हेराम सिर्फ चपत लगानेके मूडमें हैं। इतने चपत खाकर तो कोई भी नाच-गाना भूल सकता है। हम उसे धन्यवाद देकर आगे बढ़े। मनुष्यका शरीर तो मांस-मज्जासे ही बनता है। मगर यहां तो प्लास्टिक, रबड़, लगदी, काठ, खद्दर, रेशम, टिन, लोहा, गत्ता—गरज कि बीसियों किस्मकी चीजोंसे बने खिलौने मौजूद थे। कोई आंखें मटका रहा है, कोई जबान बाहर-भीतर करता है, कोई हाथ उठाकर सलाम कर रहा है, कोई मशकसे पानी छिड़क रहा है, कोई झाड़ू लगा रही है, कोई सजीधजी खड़ी सिर्फ गहने-कपड़े ही दिखा रही है। तांगा, मोटर, टैंक, तोप, बुलडोजर, ड्रमर (ढोल बजाने वाला), कागजके फूल-पौधे, रेल, हवाई जहाज, जेट, हाथी, घोड़े, पतंगी—जय कन्हैयालालकी—इंजीनियर सैट, किचन सेट, प्लास्टिककी ईंटें, टाइपिस्ट (खटाखट खटाखट क्रररररररररर), बैरा, साहब, मुन्ना-मुन्नी, दूधकी बोतलसे दूध पीता बंदर, मस्त कलंदर, ऊंट, खरगोश, कुत्ता, चिड़िया, तोता, भालू, डांस करता रूसी जोड़ा, सरकसका घोड़ा, जिधर मोड़ा उधर दौड़ा, न खाए कमची, न खाए कोड़ा!

हर कोई कहता कि हमें ले चलो, हमें ले चलो—भला, किसे ले चलें, किसे न ले चलें!

गुड्डे-गुड़ियाका एक जोड़ा नाच-रंगमें तल्लीन था

खिलौनोंकी दुनियाके ये कुछ इनेगिने ऐक्टर हैं

यह तो पूरी दुनिया है दुनिया। यहां मिट्टीके फल वृक्षोंपर लगे हुए हैं, चक्कीमें आटा पिस रहा है और पिसनहारीकी चूड़ियां खनक रही हैं। गांवकी कोई ग्वालिन दही बिलो रही है, धोबिन कपड़े धो रही है। हमें लगा कि यह एक बहुत बड़ी दुनिया है, जिसमें हम एक नन्हे से बच्चे हैं और इसमें कहीं खो गए हैं।

अगर नन्हेरामको इस दुनियामें लाकर छोड़ दिया जाए, तो हजरत सारी छकड़ी भूल जाएं और सोते-जागतेका पता लगानेके लिए स्वयं अपने ही गालोंपर चपत झाड़ने लगें।

"हां, साहब, इन खूबसूरत खिलौनोंमेंसे कोई आपको पसंद आया?"

हमने चौंककर पीछे देखा। दुकानदार अब हमारी सेवा करनेके लिए तैयार था। अब हमें महसूस हुआ कि हम एक दूकानमें खड़े थे और यहां कुछ खरीदारी करनेके लिए आए थे। हमने कहा : "देखिए, एक बच्चा है कोई तीन-चार बरसका। जरा बदतमीज किस्मका है, गुड्डे को बुड्ढा कहता है, और चपत मारनेको ही खेल समझता है। क्या आप कोई ऐसा खिलौना बता सकेंगे—मेरा मतलब कि—यानी जो उसकी इस आदतको—यानी कि चपत...."

दुकानदार हंसने लगा। वह भी बुड्ढा था। उसके दांत नकली थे। वह बोला, "आपके कितने बच्चे हैं?"

"सिर्फ एक—नन्हेराम!"

"गुड!" वह बोला, "आप शायद उसे गली-मुहल्लेके बच्चोंके साथ नहीं खेलने देते?"

"ऐसी कोई खास मनाही भी नहीं। लेकिन उसकी अम्मी अक्सर बाहर निकलनेसे रोकती है।"

"आप कितने खिलौने लेना चाहते हैं?"

"सिर्फ एक।"

"तो आप उसे चपत मारनेसे नहीं रोक सकते। ताज्जुब नहीं कि कल तक वह खिलौनेको तोड़ताड़कर बरबाद भी कर दे। जब वह बड़ा हो जाएगा, तो आपके गाल भी अच्छे-खासे तबलेकी जोड़ीका काम दे सकते हैं। वह अभीसे गुड्डे और बुड्ढेमें फ़रक नहीं समझना चाहता।"

(शेष पृष्ठ ३९ पर)

भला कोई बुड्ढा या गुड्डा ऊंटसे ऊंचा होता होगा!

कहानी

डिमटिम खरगोश

डिमटिम खरगोश बड़ा आकर्षक था। उसके सफेद चमकदार बाल, गुलाबी होंठ और नोकदार पतले कान देखकर लगता कि बेचारा बड़ा भोला है, पर था वह बड़ा समझदार। जंगल में बचपनसे ही अकेला रहता आया था। बाप उसके पैदा होनेसे पहले कहीं गुम हो गया था और माको लोमड़ीने खा लिया था। सवेरे जल्दी उठकर वह अपना घर पत्तोंसे साफ करता था, फिर हाथोंको मुंहपर फेरकर आहिस्तासे नाश्ते की खोजमें चल पड़ता था।

एक दिन वह जंगलमें चला जा रहा था। अचानक उसने देखा कि एक कुत्ता और बकरी लड़ रहे हैं। सोचा बीच-बचाव करना चाहिए, पर दोनों डिमटिमसे कई गुना लम्बे-चौड़े थे। वह दूर खड़ा कुछ देर उन्हें देखता रहा, फिर बोला, "भाइयो, क्यों सुबह सुबह खानेकी तलाश करनेकी बजाय लड़ रहे हो?"

दोनोंने झिड़की दी : "चुप रहो!"

डिमटिमने कहा, "लड़ने वालोंको देख बहुत से लोग और लड़ानेकी सोचते हैं। हम चूंकि आप लोगोंसे कम ताकतवाले और छोटे हैं, इसलिए सोचते हैं कि आपसमें मिलजुलकर रहना चाहिए। क्या पता कब कोई बड़ी ताकतवाला आ जाए और खत्म कर दे सबको!"

दोनों पलटे : "क्या मतलब? हमसे भी बड़ी ताकतवाला?"

"जी!" डिमटिम बोला।

"ऐसा कौन है?" कुत्तेने एक कदम आगे बढ़ते हुए पूछा।

"शेर..." डिमटिमने कहा।

"मैं ... मैं ... मैं ..." बकरीने सिर हिलाया। कुत्ता कमर खुजाने लगा।

"शेर तो शेर ही है। मिलजुलकर रहने से क्या वह डर जाएगा?" कुत्ता बोला।

"बिलकुल। किस किससे लड़ेगा?" डिमटिम ने जवाब दिया।

"बात तो ठीक है," बकरी बोली, "क्योंकि अगर वह मुझे पकड़ने आए और तुम मेरे दोस्त हो, तो तुम कमसे कम भौं-भौं करके सामना कर सकते हो, और कुछ नहीं तो, मुझे भाग जानेका समय तो दे ही सकते हो।"

"और मैं शेरका नाश्ता बनूं? माफ कीजिए, ऐसी आदत हमें नहीं सीखनी ..."

और वह दोनों फिर लड़ने लगे। इतने

लगीं। "बिलकुल!" कुत्ते महाराजने विश्वास दिलाया।

"कैसे?" डिमटिमने पूछा।

"सुनो, यहांसे कुछ दूर किलावती महारानीका महल है। उसके बागमें एक तालाब है, जिसमें एक लाल जादुई मछली रहती है। कहते हैं कि अगर उसे कोई मार दे, तो वह खुद लाल हो जाता है, और उसके पर भी उग जाते हैं।"

"शुक्रिया, महाराज। तुम सचमुच मेरे दोस्त हो। मैं अभी जानेकी तैयारी करता हूं," कहते हुए डिमटिम जल्दीसे अपने घरमें गया। कुछ खानेकी चीजें बांध कर लकड़ीपर टांगीं और उसे कंधेपर रखकर निकल पड़ा—किलावती महारानीके महलकी खोजमें।

चलते चलते वह बहुत दूर निकल गया, पर अभी तक महलका कहीं पता नहीं था। वह इधर-उधर देखने लगा। सामनेसे एक लकड़हारा आता हुआ दिखाई दिया।

उससे डिमटिमने पूछा, "बड़े साहब, किलावती महारानीका महल कितनी दूर है?"

उसने जवाब दिया, "इस पहाड़की दूसरी तरफ" और चला गया। शाम तक डिमटिम महलके दरवाजेपर पहुंच सका। पर अब अंदर कैसे जाए? दो तगड़े, भयानक किस्मके आदमी पहरा दे रहे थे। किसी तरह उनकी आंख बचाकर वह अंदर घुस गया। वह बड़ी सावधानीसे चल रहा था कि एक बच्ची मिल गई। उसने झटसे डिमटिमको पकड़ लिया।

डिमटिमने डरते डरते अपनी बात कही। लड़की उसे छोड़ते हुए बोली, "चलो, मैं तुम्हें वह तालाब बता दूं। लेकिन सुनो, जादुई मछलीको मारना आसान नहीं है। तुम्हें उसके दोस्त तोते मियांको पकड़कर चार बार हिलाना पड़ेगा, तभी मछली मरेगी।"

"पर तोते मियां कहां रहते हैं?"

"वहीं झाड़पर!" वह दोनों साथ चलने लगे।

लड़कीने दूरसे झाड़ और तालाब डिमटिमको दिखाया और मुड़कर महलमें चली गई। कुछ देर सोचकर डिमटिमने अपनी पोटली खोली और मुरमुरे निकाले। फिर तालाबके पास जाकर बड़ी मीठी आवाजमें पुकारने लगा—"मीठे मुरमुरे! मीठे मुरमुरे!" मछली यह आवाज

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

छोटी छोटी बातें—

—जगदीश कौशल

जबरदस्ती सारे बाल मुंडवा दिए, मम्मी ने, जरा भी रहम नहीं आया!

खैर, कोई बात नहीं, बुद्धि तो आई। असली बुद्धिमान गंजे ही होते हैं!

कहानी

गुलाम अयाज़

लीला दयाल

अयाज बगदादके बादशाह महमूदका गुलाम था। वह अनपढ़ होते हुए भी बुद्धिमान था। इसी कारण महमूद उसे बहुत चाहता था। यहां तक कि राज्यके कामोंमें भी वह अक्सर उससे राय लिया करता था। परंतु एक गुलामकी इतनी इज्जत भला दरबारी लोग कब देख सकते थे! इसीसे वे अक्सर उससे जला करते थे तथा उसे हानि पहुंचानेकी चेष्टा किया करते थे।

एक दिन संयोगवश महमूदकी एक कीमती चीज गायब हो गई। अयाज सबकी आंखोंका कांटा तो था ही, इसलिए इस चोरीका इल्जाम सबने उसीके ऊपर थोपना चाहा। यहां तक कि महमूद को भी इसका विश्वास दिलाया गया कि हो न हो, यह अयाजकी ही करतूत है। महमूदने भी कुछ सोचकर अपने दरबारियोंसे खुफिया तहकीकात करनेके लिए कहा। अब सब लोग इस टोहमें रहने लगे कि अयाज कहां जाता है और कहां उठता-बैठता है।

अयाज जिस घरमें रहता था, उससे थोड़ी दूरपर एक कोठरी थी, जिसमें वह बिना नागा हर रोज जाता और करीब दस-पंद्रह मिनिटके बाद उसमें से निकलकर कुंडी चढ़ाकर ताला लगा देता। विरोधियोंने समझा, हो न हो अयाज चोरीका माल इसी कोठरीमें रखे है, क्योंकि वह किसी औरको उसमें न जाने देता था। लोगों ने जाकर महमूदसे कहा—"जहांपनाह, अगर आप कुछ तकलीफ करें, तो माल बड़ी आसानीसे बरामद हो सकता है, हुजूरके खौफ की वजह से हमारी तो हिम्मत नहीं पड़ती। पर, हमें पूरा एतबार है कि माल अयाजके ही पास है।"

महमूद सबके साथ कोठरी तक पहुंचा। उस समय अयाज कोठरीमें ही था। आदमियोंकी आहट पाते ही वह फौरन निकल आया। बाहर बरामदेमें उसने देखा कि बादशाह अपने चंद दरबारियोंके साथ खड़े हैं। लेकिन इसकी कुछ परवाह न करके वह दरवाजा बंद करके कुंडी चढ़ाने लगा। महमूदने कहा, "ठहरो, अयाज, मैं तुम्हारी इस कोठरीको देखना चाहता हूं।"

इसपर अयाजने हाथ जोड़कर कहा, "जहांपनाह, इसके लिए माफी दें, मैं इस कोठरीमें किसी को नहीं जाने दूंगा।"

अब तो महमूदको भी शक हुआ। उसने मन में सोचा, दालमें काला जरूर है। अतः उसने कहा,

"मैं जरूर देखूंगा।" और इन शब्दोंके साथ ही कुंडी अपने हाथोंसे खोल दी। वह दरबारियोंको साथ लिए अंदर गया। देखा, कोठरी चारों ओरसे साफ-सुथरी है। उसके एक कोनेमें मैले कपड़ेमें बंधी एक छोटी-सी गठरीके सिवा और कुछ नहीं है। महमूद जब तक गठरी तक पहुंचे, अयाजने दौड़कर गठरी छीन ली और गिड़गिड़ाकर कहने लगा, "बस, हुजूर इसे न देखें।"

महमूदका संदेह और बढ़ गया। उसने कहा, "अयाज, यह गठरी जरूर देखी जाएगी।" उसने फिर वैसे ही गिड़गिड़ाकर कहा, "खुदावंद, खुदा के लिए इसे न देखें।"

इसपर एक दरबारीने डपटकर कहा, "बदमाश कहीं का! चोरी और ऊपरसे सीना जोरी! छोड़ दे गठरी....।"

अयाज गठरी छोड़कर अलग हो गया। एक दरबारी गठरीकी ओर बढ़ा, लेकिन महमूदने उससे कहा, "ठहरो, हम खुद देखेंगे।"

इतना कहकर उसने गठरी खोलनी शुरू की। सबसे पहले उसमेंसे बहुत बुरी हालतमें एक फटी-पुरानी टोपी निकली। महमूदने उसे देखा, झाड़ा और अलग रख दिया। फिर उसी हालतमें एक कुरता मिला। महमूदने उसे भी खूब टटोलकर देखा, झाड़ा और अलग रख दिया। फिर एक पायजामा मिला, जो कई पेवंद लगे होने-पर भी बहुत बुरी हालतमें था। बादशाहने उसे भी देखकर रख दिया। उसके बाद वही फटा-मैला गमछा था, जिसमें सारे कपड़े बंधे थे। इन सबको देखकर महमूदने अयाजको आश्चर्यकी निगाहसे देखते हुए कहा, "अयाज, इसमें ऐसी कौन-सी चीज थी, जिसे तुम मुझे नहीं दिखाना चाहते थे?"

बेचारा अयाज चुपचाप खड़ा था। उसकी आंखें डबडबा आईं, भर्राई आवाजमें उसने कहा: "जहांपनाह, इसमें मेरी आबरू थी, जो अब तक ढकी थी, लेकिन आज उसका परदा फाश हो गया!"

"कैसी आबरू, अयाज?" महमूदने पूछा।

अयाजने कहा, "जहांपनाह! यह मेरे वही कपड़े हैं, जिन्हें पहनकर मैं आपके इस शहरमें आया था। आज हुजूरकी मेहरबानीकी बदौलत इस दर्जेपर पहुंचा हूं। मेरे ये कपड़े बराबर मुझे मेरे अतीतकी याद दिलाते रहते हैं, ताकि मैं अपने अस्तित्वको भूल न जाऊं और मुझमें अभि-मान न आ जाए।"

महमूद कुछ देर तक चुपचाप खड़ा रहा। उसकी आंखोंसे आंसूकी बूंद टपक पड़ी। फिर अपने को संभालते हुए उसने कहा, "मेरे अजीज अयाज, आजसे तुम्हें कोई गुलाम नहीं कह सकता। मैंने तुम्हें अपनी सल्तनतका वजीरे-आजम बनाया।"

अयाज महमूदके कदमोंपर गिर पड़ा। मह-मूदने उसे उठाकर अपने सीनेसे लगा लिया। ●

खिलौने वाला

बाबू राम खिलौने वाला,
ये सब दो आने में, लाला।
चाहे ले लो गुड़िया-गुड्डा,
चाहे ले लो बुढ़िया-बुड्ढा।
चाहे ले लो बंदर काला,
बाबू राम खिलौने वाला।

चाहो तो यह फुग्गा ले लो,
मन चाहे तो सुग्गा ले लो।
चाहे मोटर गाड़ी ले लो,
तेज दौड़ने वाली ले लो।
हॉर्न बजाना पों-पों वाला,
बाबू राम खिलौने वाला।

ले लो टाइप करती गुड़िया,
यह पूरी जादू की पुड़िया।
टाइप करती खूब पटापट,
खतम करे सब काम चटाचट।
चाहे ले लो कुत्ता काला,
बाबू राम खिलौने वाला।

रंग-बिरंगी हैं टोकरियां,
'मैं-मैं' करती भेड़-बकरियां।
रंग-बिरंगी चिड़ियां लाया,
सुंदर सुंदर घड़ियां लाया।
मैं तो हूं घुनघुने वाला,
बाबू राम खिलौने वाला।

ये गुब्बारे मित्र हमारे,
इनसे ब्रह्मा भी हैं हारे।
छण में जो चाहो बन जाते,
मोड़-तोड़ हम उन्हें बनाते।
कितना सस्ता देने वाला,
बाबू राम खिलौने वाला।

मैंने देखी सारी दुनियां,
चीन, अरब औ' कुस्तुनतुनिया।
सभी खिलौने सैलानी हैं,
कुछ बर्मी कुछ जापानी हैं।
पीछे मत पछताना, लाला,
बाबू राम खिलौने वाला।

मंगलराम मिश्र

भारतवर्ष बहुत बड़ा देश है। यहां बहुतसे त्योहार मनाए जाते हैं, जिनमें कुछका संबंध विशेष जातियोंसे है, कुछका ऋतुओंसे और कुछ खेती और किसानोंसे संबंधित हैं। लेकिन ४५ करोड़से भी अधिक आबादीवाले इस महान देशमें नन्हे-मुन्नोंका कोई ऐसा त्योहार नहीं, जिसे केवल बालक एक साथ मिलकर मनाएं। वैसे यहां बालक राम, नन्दगोपाल, प्रहलाद, ध्रुवकुमार जैसे आदर्श बालक हो गए हैं, लेकिन उनकी यादमें भी कोई विशेष त्योहार नहीं मनाया जाता। हां, रामनवमी, दशहरा या जन्माष्टमीपर बच्चे, बड़ोंके साथ मिलकर त्योहार मनानेका आनंद उठा लेते हैं।

शायद इसी कमीको ध्यानमें रखते हुए,

केवल भारतवर्ष ही नहीं, बल्कि सारे संसारके बच्चोंके लाड़ले चाचा नेहरूने अपने जन्म-दिवसको बाल-दिवसके रूपमें बच्चोंके त्योहारका दिन बना दिया था। कारण यह भी था कि नेहरूजी, संसारके बहुतसे देशोंकी यात्रा करते समय, यह देख चुके थे कि वहां बालकोंके मनोरंजनका, उनकी शिक्षाका, उनके विकासका कितना ध्यान रखा जाता है। बच्चोंके इन मेलोंको या त्योहारोंको खेलकूदका ही नहीं, मेल-मिलाप और जानकारीका भी एक शुभ अवसर ठहराया जाता है।

इसी प्रकारका एक त्योहार, चाचा नेहरूने लगभग सारे योरोपके देशों और अमरीकाके ईसाई परिवारोंमें देखा था। वह था बड़े दिनका त्योहार। यह २५ दिसंबरसे लेकर आने वाले वर्षकी पहली तारीख तक मनाया जाता है।

बड़े दिनको संसार भरके ईसाई परिवार एक महान पर्व और पवित्र त्योहारके रूपमें मनाते हैं। आज ही के दिन इस जातिके लोग विवाह-शादीकी बात तय करते हैं, नए मकानों और नई दूकानोंका मुहूर्त करते हैं और नए नए कपड़ोंमें सजधजकर अपने सभी सगे-संबंधियों और इष्ट-मित्रोंसे मिलते हैं। जिस प्रकार दीवालीको व्यापारी वर्ग नए वर्षका दिन मानता है और जिस प्रकार होलीके दिन इस देशके रहने वाले भुजा फैलाकर दुश्मनको भी गले लगाते हैं, उसी प्रकार बड़ा दिन ईसाई जातिमें मेल-मिलाप का पवित्र दिन माना जाता है। यह दिन उतना ही पवित्र है, जितना मुसलमान भाइयोंके लिए ईद और पारसी भाइयोंके लिए पटेती।

बड़े दिनके दिन, हर बालक बिस्तरसे उठने के साथ सफेद बर्फसे लदे पेड़ों और ढकी खिड़कियोंमेंसे झांकती हुई जब सूरजकी किरणोंके साथ नए वर्षका आगमन देखता है, तो उसकी नजर सबसे पहले उस मोजेपर पड़ती है, जो उसके पालने या उसके पलंगसे बंधा हुआ होता है। ईसाइयोंमें ऐसी मान्यता चली आई है कि नए वर्षके दिन सान्ता क्लॉज काका चुपकेसे भोरके धुंधलकेमें चिमनीके रास्ते बंगलोंमें प्रवेश करते हैं और बच्चोंके पालनों और पलंगके पास लटके हुए मोजोंमें खिलौने भर जाते हैं। बच्चे इन खिलौनोंको नए वर्षके उपहार और बधाईके रूपमें स्वीकार करके नाचते-गाते हैं, खेलते-कूदते हैं।

जानते हो सान्ता क्लॉज नामका यह प्राणी कौन है? सफेद रंगकी दाढ़ी-मूंछ, माथेपर सफेद रंगकी झूमती हुई लाल फुंदने वाली लम्बी-सी टोपी (जैसी टोपी सर्कसमें जोकर पहन कर जनताको हंसाया करते हैं) और योरोपके देशोंमें पुराने वक्तोंमें पहने जाने वाला सफेद रंग का कोट और पतलून और बगलेके सफेद पंखों जैसा मोजा पहनकर आने वाले इस काल्पनिक पात्रको सान्ता क्लॉज कहा जाता है। इसके मुखड़े पर

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

चोटू और लंबू
देखो, लंबू, मेरा भतीजा सारे खिलौनों में हवाई जहाज़ ज्यादा पसंद करता है, ज़रूर यह बड़ा होकर पायलेट बनेगा!
मगर यह कैसे समझा जाए?
क्यों? जो बचपन में जैसा रहता है, बड़ा हो कर वैसा ही बनता है...
नेपोलियन बचपन में सिपाहियों की तोप और बंदूक से खेला करता था, और सब जानते हैं कि बड़ा होकर उसने वही काम किया!
अगर यह बात है, तो अहा-हा-हा!
क्या मतलब?
देखो मेरा खिलौना:
मैं बचपन में शेर से खेलता था!
तो, अब मैं शेर वाला बनूंगा - क्या मजाल कि शेर मेरे आगे चूं तक कर सकें!
सावधान रहिए!
सरकस का शेर निकल भागा है, अपनी जान बचाइए, उसे जिंदा या मुर्दा पकड़वाने वाले को पांच सौ का इनाम!

PRASHANT Kumar Class VII

● रघु अग्रवाल

विंटर कार्नीवल और बर्फ की मूर्तियां

आलसी रिपवान

रातके लगभग दो बजे होंगे। मैं अपने हॉस्टलको लौट रहा था। आकाशमें शरद ऋतुका आधा चांद चमक रहा था और उसकी चारों ओर तारे छिटके हुए थे। एड़ीसे चोटी तक कपड़ोंसे ढका था, फिर भी मेरी कंपकंपी छूट रही थी। धीमी धीमी और सर्द हवाके साथ रूई जैसी बर्फ न जाने कबसे गिरे जा रही थी।

अपने हॉस्टलके निकट आया, तो देखा दस-बारह अमरीकन युवक बर्फकी मूर्तियां बनानेमें व्यस्त हैं। ऊपर बिजलीके बल्ब लगे थे। लाउड स्पीकरसे निकलती मधुर संगीतकी लहरें वातावरणको मोहक बना रही थीं। इच्छा हुई मैं भी उनके साथ मूर्तियां बनानेमें जुट जाऊं, लेकिन सर्दीका विचारकर हिम्मत नहीं पड़ी।

यों किताबोंमें संयुक्त राज्य अमरीकाके प्रसिद्ध शरदोत्सव 'विंटर कार्नीवल' के विषयमें पढ़ा जरूर था, लेकिन निकटसे देखनेका यह पहला ही अवसर था। ये युवक उसी उत्सवकी तैयारियोंमें लगे थे।

अमरीकाके इस भागमें बहुत सर्दी पड़ती है, इतनी कि बर्तनमें पानी भरकर बाहर रख दो, तो थोड़ी देरमें बर्फ बन जाता है। दिनमें भी बर्फ गिरती रहती है—वैसी

बुढ़िया का जूता

सिंड्रेला का रथ

बर्फ नहीं, जैसी हम शरबतमें डालते हैं, क्योंकि वह तो बहुत भारी होती है, सिर भी तोड़ सकती है!

यहां जो बर्फ गिरती है वह बहुत ही सफेद और मुलायम होती है—रूई जैसी। जब तक शरद ऋतु रहती है, बर्फ पिघलती नहीं, बल्कि सड़कों, फुटपाथों, मकानोंकी छतों और मैदानोंपर पड़ी हुई ऐसी दिखाई देती है जैसे किसीने उजली सफेद मखमलकी चादर बिछा दी हो अथवा किसीने आकाशसे बहुत-सारा दूध उंडेल दिया हो। बच्चे बर्फके छोटे

डायन का घर और भाई-बहन

और व्यस्तता होती है कि कई बार दुर्घटनाएं भी हो जाती हैं।

इस साल विंटर कार्निवल छह फरवरीसे आठ फरवरी तक मनाया गया। उत्सवके दस दिन पहलेसे ही लोगोंने तैयारियां प्रारंभ कर दी थीं। स्थान स्थानपर मूर्तियां बनाई जाने लगीं। मिशीगन राज्यमें बहुत बर्फ पड़ती है इसलिए यहांपर बर्फकी विशालकाय मूर्तियां बनाई जाती हैं, जिन्हें पंद्रह-बीस व्यक्ति मिलकर बनाते हैं।

दूसरे दिन मैं प्रातःकाल कालेजकी ओर चला, तो चारों ओर अजबकी

छोटे लड्डू बनाकर एक दूसरेपर फेंककर आनंद लेते हैं। कुछ बिना पहियोंकी गाड़ीमें बैठकर बर्फपर फिसलनेका मजा लूटते हैं।

इस मौसममें सभी प्रसन्न दिखाई देते हैं। चारों ओर खुशी छलकी पड़ती है। छोटे-बड़े सभी बच्चे बर्फकी मूर्तियां बनाते हैं। जगह जगह नाटक होते हैं, प्रतियोगिताएं होती हैं। शहरकी सबसे सुंदर लड़कीको महारानीकी पदवी दी जाती है। स्कूल और कालेजोंमें तीन दिनकी छुट्टियां हो जाती हैं। इसे ही विंटर कार्निवल कहते हैं।

विंटर कार्निवल अमरीकाके विभिन्न शहरोंमें अलग अलग ढंगसे मनाया जाता है। पर सब जगह बड़े बड़े जुलूस जरूर निकलते हैं, जिनमें इतना भीड़-भड़क्का

एलिस जादू के देश में

जादूगर का महल

मूर्तियां नजर आईं। मैं नेभी बचपनमें मिट्टीके घरौंदे बनाए थे। एक पंजेपर मिट्टी थोप ली और पैर खींचते ही घरौंदा बन गया। ये बर्फकी मूर्तियां भी बहुत कुछ ऐसी ही लगीं। घरौंदा हम निरुद्देश्य बनाते हैं, लेकिन इन मूर्तियोंका कुछ न कुछ उद्देश्य होता है।

इस बारकी मूर्तियोंका उद्देश्य था बच्चोंके कल्पना लोक—'लैंड ऑफ दी सैंडमैन' अर्थात् 'परियोंका देश' को मूर्तिमान करना। सभी देशोंके

(शेष पृष्ठ ५९ पर)

एक था राजा। प्रजाकी भलाईकी ओर उसका ध्यान अधिक रहता था। एक रात उसने सपनेमें एक मरे हुए सांपको लटकते हुए देखा। सांपकी पूछ ऊपर थी और मुंह नीचेकी ओर। लाख सिर मारने पर भी वह इस सपनेका अर्थ न निकाल सका। उसने अपने मंत्रियोंसे पूछा। पर उसके मंत्री भी अर्थ बतानेमें असफल रहे। तब उसने अपने राज्यमें डुग्गी पिटवा दी और ऐलान करवा दिया कि जो कोई भी इस सपने का सही अर्थ बता देगा, उसे मुंह मांगा इनाम दिया जाएगा। इनामके लोभमें चारों ओरसे लोग आने लगे। बहुत दूरके एक गांवमें एक गरीब किसानने भी वह ऐलान सुना। वह भी अपनी किस्मत आजमाने राजधानीकी ओर चल पड़ा। बीच रास्तेमें उसे एक बूढ़ा फकीर मिला। वह एक पत्थरपर बैठा था। उसकी दाढ़ी-मूंछें सफेद थीं। फकीरने किसानको अपने पास बुलाया। यात्राका उद्देश्य पूछा। इसपर किसान ने सारी बात सुना दी। फकीरने पूछा, "क्या तुम्हें विश्वास है कि तुम सपनेका सही अर्थ बता सकोगे?"

किसानने इसपर सोचा ही नहीं था। उसे तो केवल इनामकी लालसा राज-दरबार की ओर लिये चली जा रही थी। उसकी आंखों में असमर्थता छलक आई। फकीरने अच्छी तरह जान लिया कि वह सपनेका अर्थ नहीं बता सकता। उसको किसानकी हालतपर बड़ा तरस आया। वह उसकी पीठपर हाथ रखकर बोला, "मैं तुम्हें सपनेका सही अर्थ बता दूंगा, पर एक शर्तपर।"

किसानने विनयके रूपमें दोनों हाथ जोड़ दिए और कहा, "आपकी बड़ी कृपा होगी। मैं बड़ा उपकार मानूंगा। मेरे बच्चे आपको दुआ देंगे। आप अपनी शर्त बताएं।"

"देखो वादेसे मुकर न जाना।"

"नहीं, महाराज, आप विश्वास रखिए। मैं झूठ, फरेब, धूर्ततासे कोसों दूर रहता हूं। गरीब हूं, पर दगाबाज नहीं। आप अपनी शर्त कहें।"

"देखो, सपनेका सही अर्थ बता देनेपर राजा तुम्हें मुंह-मांगा इनाम देगा। अगर तुम राजासे पाए हुए धनका आधा हिस्सा हमें देते जाओ, तो मैं तुम्हें सपनेका सही अर्थ बता दूं। एक बात और, धन लेते समय तुम अकेले रहोगे, क्योंकि मैं वहां तुम्हारे साथ तो रहूंगा नहीं। ठीक ठीक हिस्सा देना मैं तुम्हारी ईमानदारीपर छोड़ता हूं।"

"हां, आप मुझपर विश्वास रखिए। जो कुछ मिलेगा उसका आधा हिस्सा आपको देकर ही घर जाऊंगा। अब आप सपनेका अर्थ बताएं।"

"तो सुनो," फकीरने कहा, "मरे हुए सांपका सपनेमें इस प्रकार लटकते दीखना इस राज्यमें फैली बुराईका चिन्ह है। राजाके साथ रहने वाले मंत्री आदि विनीत बननेका ढोंग रचते हैं, पर हैं वे लोग भीतरसे कपटी। इसलिए राज्यमें चारों ओर झूठ, फरेब, कपट आदि फैला हुआ है। कोई भी बात सत्य रूपमें राजा तक नहीं पहुंच पाती। प्रजा भी झूठी और कपटी है।"

किसान खुशी खुशी राजदरबारकी ओर चला। वहां जाकर उसने सपनेका सही अर्थ बताया। राजाने प्रसन्न होकर उसे बहुत सारा धन दिया। किसान पहलेवाला रास्ता छोड़कर

कहानी

यथा राजा तथा प्रजा

दूसरेसे घर लौट आया। क्योंकि अब वह नहीं चाहता था कि कोई उसके इनाममें हिस्सा बंटाए।

कुछ दिनों बाद राजाने फिर एक सपना देखा। इस बार उसे सपनेमें छतसे लटकती हुई खुली तलवार नजर आई। राजाने उस किसानको फिर बुलाया। किसान उसी रास्तेसे चला। ठीक पहलेवाले स्थानपर वह बूढ़ा फकीर बैठा था। उसकी आंखें क्रोधसे लाल थीं। फकीरको इस अवस्थामें देखकर किसान डर गया। उसने दोनों हाथ जोड़ दिए। गिड़गिड़ाने लगा। उसके बहुत अनुनय-विनय करनेपर फकीरने कहा, "अपनी प्रतिज्ञा याद रखो। इनाम मिलनेपर अबकी बार भूलना मत। आधा हिस्सा दिए बगैर घर मत जाना, समझे?"

"हां, इस बार दिए बिना घर नहीं जाऊंगा," विनयके स्वरमें किसानने कहा।

"तो सुनो," फकीर सपनेका अर्थ सुनाने

लगा, "इस राजाके राज्यमें चारों ओर निकम्मापन है। प्रजामें आलस्यकी भावना अधिक है। देशके हितकी भावना उनमें नहीं है। पड़ोसी देश इसे देख रहा है। खुली लटकती तलवारका अर्थ है निकट भविष्यमें युद्ध। राजाको सावधान रहने के लिए कहना।"

राजासे जाकर किसानने सपनेका वही अर्थ बताया और इनाम लेकर फिर दूसरे रास्तेसे लौट आया।

तीसरी बार राजाने सपना देखा। इस बार एक कत्ल की हुई भेड़को छतसे लटकते देखा। फिर वही किसान बुलाया गया। किसान डरते डरते फिर उसी रास्तेसे चला। निश्चित स्थान पर फकीर बैठा हुआ था। फकीर उस समय मंद मंद मुस्करा रहा था। किसानके मनमें जो डर की आशंका थी, चली गई। निर्भय हो उसने सपनेका अर्थ पूछा और वादा किया कि अबकी बार फिर वैसी गलती नहीं होगी।

फकीरने कहा, "ठीक है।" इस बार उसने इनामके आधे हिस्सेपर कोई खास जोर नहीं दिया। उसने सपनेका अर्थ बताया कि राजाकी तत्परतासे झूठ-फरेब, कपटका नामोनिशान मिट गया है। राजा और मंत्री ईमानदारीसे प्रजाके लिए काम कर रहे हैं। प्रजा में एकताकी भावना जाग उठी है। मतलब यह कि राज्यसे दुर्गुण मिट गए हैं। युद्धकी आशंका खत्म हो गई है। अब चारों ओर शांति और खुशहाली रहेगी।

राजाने उसे भरपूर इनाम देकर विदा किया। इस बार किसान उसी रास्तेसे घर लौटा। निश्चित जगहपर फकीर बैठा था। किसानने इस बार सारा इनाम उसके सामने रख दिया और अपने किए हुए दोषोंके लिए क्षमा मांगी। फकीरने कहा, "दुखी मत हो। तुमने जो कुछ किया वही ठीक है। पहले सारे देशमें झूठ और फरेबका राज्य था और तुम उससे अलग नहीं हो सकते थे, इसलिए तुमने भी मुझे धोखा दिया। दूसरी बार लड़ाईकी संभावना थी। लड़ाईके वक्त अक्सर वादे नहीं निभाए जाते। तुमने भी वैसा ही किया। लेकिन तीसरी बार राज्यके सारे दुर्गुण खत्म हो गए और तुमने भी इस बार अपना मन बदल लिया और पुरस्कार लेकर मेरे पास चले आए। आओ, मुझे इस धनकी आवश्यकता नहीं। बच्चोंके साथ सुख और शांतिसे रहो। देख लिया न, मनुष्य हमेशा समयके साथ बदलता रहता है। राजाके आसपासके लोग और राजकर्मचारियोंमें यदि दुर्गुण हों, भ्रष्टाचार हो, निकम्मापन हो, तो प्रजा में भी यही सब कुछ होगा। पहले राजतंत्र दूषित था, तो तुमने भी मुझसे झूठ बोला, मुझे धोखा दिया, लेकिन अब जब राजा का शासन बुराइयोंसे मुक्त है, तो तुम्हारा मन भी दर्पणकी तरह स्वच्छ हो गया।" किसान ने फकीरके चरण छुए और प्रसन्न मन घर लौट आया। ●

गोविंदा

मैं भी एक खिलौना हूं!

मैं कुदरतका एक करिश्मा,
जिंदा जादू - टोना हूं;
हाड़-मांसका, चलता-फिरता
मैं भी एक खिलौना हूं!

बिना किसी चाबी के, मेरे
होंठ आप खुल जाते हैं;
बिना दबाए किसी बटन के,
नैना सैन चलाते हैं!

सुन-सुनकर गुरुजीके लेक्चर,
मैं हो जाती हूं गुमसुम;
कहते हैं वे मुझे देखकर,
'प्लैटो की दादी हो तुम!'

नहीं रबड़की ना प्लास्टिककी,
मूरत जैसे पत्थर की;
पंद्रह की भी हुई न अब तक,
बनती हूं पिचहत्तर की!

कक्षा की सहेलियों में मैं
सब से ज्यादा सुंदर हूं,
सुंदर ही क्यों अभिनय में भी,
सचमुच कला - धुरंधर हूं!

खुद अपनी तारीफ हांकना,
अजी, मैं कहां जानू हूं;
मगर लड़कियां सारी कहतीं,
कि मैं सायरा बानू हूं!

हीरोइन कहलाती हूं पर
पढ़ने-लिखने में हूं गोल;
शाला की रिपोर्ट जब आती,
तब खुल जाती मेरी पोल!

देख रिपोर्ट पिताजी मेरे,
भौंचक्के रह जाते हैं;
टिका हाथ माथे पर अपने,
ऐसा 'पोज' बनाते हैं!

और उधर माताजी मेरी,
उनका मन भी खीझा है;
मैं दिन भर कुदान भरती हूं,
उसका यही नतीजा है!

डांट-डपट का असर न होता,
नहीं सुधरते मेरे ढंग;
वह इस मुद्रा में बैठी है,
होकर मुझसे बेहद तंग!

यह सब देख, मुझे भी अपने
ऊपर गुस्सा आता है;
शरारतों को मारूं गोली,
मन में यही समाता है!

आंख साधती तुरत निशाना,
उंगली ट्रिगर दबाती है;
मगर करूं क्या, यह मेरी,
पिस्तौल दगा दे जाती है!

कविता : आलोक शीशोदिया

फोटो : सहदेव

बच्चो, क्या तुम किसी एक जादूघरकी कल्पना कर सकते हो, जहां पहुंचकर अपने वास्तविक संसारको भूल जाओ? वहां तुम्हारे लिए जल-थलमें खेले जा सकने वाले सभी तरहके खेल हों, जलमें तैरती सुंदर सुंदर मत्स्य-कन्याएं हों, हवामें उड़ने वाले नन्हे नन्हे हवाई जहाज हों, जमीनसे आसमानकी सैर कराने वाली रेलें हों, पल पलमें बदलने वाले विचित्र जादुई दृश्य हों—जहां भूत भविष्य और सपने सब एक साथ आकर मिल गए हों।

अमरीकाके कैलिफोरनिया राज्यमें ऐसा ही एक कल्पना-देश है 'डिस्नेलैंड'। यह कल्पना और सपनोंके धनी, मिकी माउस, डोनाल्ड डक तथा अन्य अनेक कार्टून-चरित्रोंके फिल्म-निर्माता श्री वाल्ट डिस्नेके दिमागकी उपज है। वाल्ट डिस्ने अमरीकाके चलचित्र जगतके दर्जनों पदक जीत

बच्चों का जादूघर

डिस्नेलैंड

यश

छाया : डॉ. एम. एच. केशवानी

चुके हैं। यह पदक चलचित्रोंमें सर्वश्रेष्ठ निर्माण-निर्देशन आदिका अकाट्य प्रमाण माना जाता है।

इस लोककी भूमिपर बसी हुई यह स्वर्गपुरी लगभग १६० एकड़में फैली है। इसका उद्घाटन सन् १९५५के जुलाई मासमें हुआ था और इसपर उस समय लगभग आठ करोड़ रुपया (१७,०००,००० डालर) खर्च आया था। इसके निर्माणसे पहले वहां चारों ओर रेतीली धरती मात्र दिखाई पड़ती थी, जिसपर संतरेके वृक्ष उगे हुए थे।

आओ, अब हम तुम्हें रंगीनियोंकी रानी इस स्वप्न-नगरीकी सैर कराएं:

अगर तुम कारमें आओ, तो तुम्हारी कार एक ऐसी जगह खड़ी होगी, जहां बारह हजार कारोंके सुविधा से खड़ी होनेकी जगह है। यहांसे तुम्हें एक मोटरसे चलने वाली रेलमें एक नन्हे-मुन्ने रेलवे स्टेशनपर ले जाया जाएगा। इस रेलवे स्टेशनसे एक ऐसी ट्रेन भी चलती है, जो बहुत पुराने ढर्रेकी है, आकारमें उससे भी बहुत छोटी है और उसमें पुराने ढर्रेके लैंप जलते हैं। इस रेलवे स्टेशनसे ही पार्कमें जानेका मार्ग है। इस प्रवेश द्वारसे भीतर जाते ही १८९० ईसवीकी शैलीके एक अमरीकन शहरमें तुम अपने आपको खड़ा पाओगे। इस शहरमें घोड़ा-गाड़ी, बग्घी, पोस्ट आफिस, दमकल स्टेशन आदि सब उसी ऐतिहासिक रंग-रूपके मिलेंगे।

यहांसे बाहर निकलते ही एक ऐसे जनस्थानपर तुम पहुंच जाओगे, जहां चार तरहके प्रवेशोंमें जानेके मार्ग तुम्हें मिलेंगे —भविष्यकी दुनिया, कल्पनाकी दुनिया, सीमांतकी दुनिया और साहसकी दुनिया। (शेष पृष्ठ ३५ पर)

डिस्ने लैंड

(पृष्ठ ३३ से आगे)

भविष्यकी दुनियाकी पहचान एक आकाश-चुम्बी रॉकेटसे होती है। इसकी चारों ओर भविष्यकी स्थापत्य कलाके ऐसे सुंदर भवन हैं कि देखते ही बनता है। इनमें बड़ी बड़ी फर्मोंके द्वारा तैयार की हुई ऐसी वस्तुएं रखी दिखाई पड़ती हैं, जो भविष्यमें आम तौरपर बाजार में बिका करेंगी। छोटी छोटी रेस-कारें हैं, सुंदर सुंदर मोटर बोट हैं। यहां रॉकेटमें पहुंचकर तुम्हें ऐसा लगेगा मानो अभी अभी चंद्रमाकी यात्रासे लौटे हो। सारी चीजें यहां सही सही वैज्ञानिक जानकारीके साथ बनाई गई हैं।

सबसे अधिक अद्भुत सपनोंकी दुनिया, कल्पना की दुनिया है। 'सोमवाला और सात बौने' की विचित्र कथा तुम पढ़ चुके हो। यहां तुम्हें एक ऐसा किला मिलेगा, जहां तुम्हें खानोंमें मिलने वाली एक गाड़ी सात बौनोंकी हीरेकी खानोंमें ले जाएगी और दुष्ट जादूगरनी तथा सोमवालासे भी तुम्हारा परिचय कराएगी। 'अद्भुत देश में एलिस' नामक विभागमें तुम्हें एलिसकी भांति ही चूहेके बिलसे उसकी दर्पणकी दुनियामें प्रवेश मिलेगा। इसी प्रकार अंग्रेजीकी अनेक ऐसी कहानियोंके बहुत-से चरित्र और वातावरण तुम्हें वहां देखनेको मिलेंगे, जिनकी विचित्रता वर्णनसे बाहर है। वहां कल्पना रंगीनियोंमें बिखरी पड़ी है।

इसी प्रकार सीमांतकी दुनियामें तुम्हें रैड इंडियन, जानवर, चरागाहें, रैड इंडियनोंके पुराने किस्मके जलयान आदि दिखाई देंगे, और यहां तुम्हें ऐसा लगेगा कि इतिहास तुम्हें सैकड़ों बरस पीछे घुमाने ले आया है।

डिस्ने लैंड—भूत की दुनिया

साहसकी दुनिया अमरीकाके दक्षिणी समुद्रके उन द्वीपोंकी सैर कराती है, जहां पूरे कदके नकली हाथी, शेर तथा अन्य जंगली जानवर जगह जगह दिखाई देंगे। पानी में प्लास्टिकके बने, किंतु असली दिखाई देने वाले मगरमच्छ, दरियाई घोड़े वगैरा दिखाई देंगे, जो आंखें मटकाएंगे, तुम्हारी नावोंका पीछा करेंगे और तुम्हें निगल जाना चाहेंगे।

बच्चोंका यह आदूबर—डिस्ने लैंड, महान कलाकार और कल्पनाके धनी वाल्ट डिस्नेके दिमागमें बीस बरसोंसे था और उसने अपार धनराशि खर्च करके अपनी उस कल्पना को साकार किया है। तुममेंसे जो बच्चे परिश्रमी और उद्यमशील होंगे, वे शायद कभी इस कल्पना-जगतकी शोभा देखनेका अवसर प्राप्त कर सकें।

(तब तक हम उसकी पांच सुंदर झांकियां (तीन रंगीन पृष्ठ ३२-३३ पर) बच्चों के मनोरंजनके लिए लेखके साथमें प्रस्तुत कर रहे हैं—संपादक दादा)

डिस्ने लैंड—भविष्य की दुनिया

कहानी

बुद्धि की जय

• अनन्त

अवधके एक गांवमें सूरजदास नामका एक किसान रहता था। उसके पास थोड़ेसे खेत थे, जिनमें खूब अच्छी फसल होती थी। उस वर्ष उसके खेतमें गन्नेकी फसल बहुत अच्छी हुई थी, इसलिए सूरजदास मचानपरसे रातको खेतकी रखवाली किया करता था।

मचान काफी ऊंचा था और उसपरसे वह खेतकी देख-भाल ठीकसे कर सकता था। एक रातको करीब दो बजे होंगे कि मचानके ठीक नीचे एक अजीब डरावनी आवाज सुनाई पड़ी। सूरजदास जाग तो रहा ही था। ध्यानसे सुनने पर उसे लगा कि आवाज किसी जानवरकी है। सूरज सतर्क हो गया। तभी नीचेसे आवाज आई, "नीचे उतरो, जी!"

सूरजदासने पूछा, "क्यों? कौन हो तुम?"

नीचेसे आवाज आई, "मैं भेड़िया हूं।"

"तो मुझसे क्या चाहते हो?" सूरजदासने पूछा।

"मुझे बड़ी भूख लगी है," भेड़िया बोला।

सूरजदासने कहा, "तो जाओ कहीं खानेकी तलाश करो, मेरे पास इस वक्त कुछ भी नहीं है।"

भेड़िएने गर्राकर कहा, "मैं तुम्हें खाने आया हूं, जल्दी नीचे उतरो।"

अब सूरजदास घबरा गया। चारों ओर घुप्प अंधेरा। गांव दूर। वह अकेला। उसने सोचा यह अजब मुसीबत आई। इससे छुटकारा कैसे पाया जाए? तभी उसके दिमागमें एक विचार आया और उसने नीचे गुर्राते हुए भेड़िएसे कहा, "दस मिनट रुको, मैं तुम्हें ऊपर ही बुला लूंगा और तुम मुझे आरामसे इस मचान पर ही खाना।"

सूरजदासके पास एक माचिस, ढेर-सा पुआल और एक कुल्हाड़ी थी। आग जलाकर उसने कुल्हाड़ीके लोहेको खूब गर्म किया। जब लोहा लाल हो गया, तो सूरजदासने भेड़िएसे कहा, "अब ऊपर चले आओ, मैं भगवानका भजन करके मरनेको तैयार हूं।"

भेड़िया खुश होकर मचानपर चढ़ने लगा। जैसे ही उसने मुंह ऊपर उठाया कि सूरजदासने जलती हुई कुल्हाड़ी उसके मुंहसे लगा दी। भेड़िया धड़ामसे नीचे गिरा और चिल्लाता हुआ जंगलकी ओर भाग गया।

पराग

जंगलमें पहुंचकर उसके साथी भेड़ियोंने उससे पूछा, "क्या हुआ? यह तुम्हारा मुंह कैसे जल गया?"

तब उस भेड़िएने सारा किस्सा सुना दिया और अंतमें बोला, "अब किसानोंकी यह मजाल हो गई है कि हमारी जातिवालोंका मुंह दाग दें!"

उसके साथियोंने कहा, "कोई बात नहीं जी, उसको देख लेंगे।" लेकिन मुंहजला भेड़िया अब उधर जानेको तैयार नहीं हुआ। तब एक अत्यंत खूंखार भेड़िएने कहा कि मैं जाऊंगा और देखूंगा कि वह किसान मेरा क्या कर लेता है। इसी बातचीतमें सुबह हो गई।

दूसरी रातको करीब एक बजे सूरजदासकी नींद फिर खुल गई और उसने कलकी ही तरह फिर आवाज सुनी। पहले तो वह चुप्पी साधे लेटा रहा, लेकिन जब नीचेसे बड़ी डरावनी आवाजमें किसीने पुकारा, "ऐ किसान!" तो सूरजदासने कहा, "कौन हो, भाई? मैं सो रहा हूं।"

नीचेसे आवाज आई, "मैं भेड़िया हूं।"

सूरजने पूछा, "क्या चाहते हो?"

भेड़िएने कहा, "नीचे उतरो, तुम्हें खानेके लिए आया हूं। तुमने कल हमारे एक साथीका मुंह जला दिया था। जल्दी उतरो।"

सूरजदास आज भी तैयार होकर आया था। अपने साथ आज वह एक जहरीला पाउडर लाया था, जो आंखमें पड़ते ही आंखकी रोशनी खत्म कर देता था। सूरजदासने मचानपरसे ही कहा, "तुम नीचे अपना मुंह मेरी तरफ करके बैठो जिससे कि मैं जैसे ही उतरूं, तो मुझे झटपट आसानी से खा सको।"

भेड़िया मुंह ऊपर करके मचानकी तरफ देखने लगा, तो सूरजदासने थोड़ा-सा झुककर जहरीला पाउडर भेड़िएकी आंखोंमें झोंक दिया और बोला, "देखो, तुम जल्दीसे ऊपर आ जाओ या रुको, मैं ही नीचे आता हूं।"

उधर पाउडर आंखमें पड़ते ही भेड़िया एकदम घबरा गया और अंधा हो गया। जब तक वह कुछ सोचे-विचारे, सूरजदासकी लाठी उसके सिरपर पड़ी और वह दुम दबाकर भागा। आंखों से दिखलाई न पड़नेके कारण उसे जंगलका रास्ता नहीं मिला, तो वह गांवकी तरफ भाग चला। रास्तेमें उसका एक साथी भेड़िया मिल गया। उसने पूछा, "इधर कहां जाते हो? गांववाले जाग रहे हैं।"

अंधे भेड़िएने कहा, "भाई, मेरी आंखोंसे कुछ दिखलाई नहीं पड़ता। मैं तो जंगलका रास्ता खोज रहा हूं।"

तब वह भेड़िया अंधे भेड़िएको जंगलमें ले गया।

जंगलमें तमाम भेड़ियोंकी एक बैठक हुई। कुल चौदह भेड़िए थे। बैठक में तय हुआ कि

(शेष पृष्ठ ४३ पर)

झाड़ू हो या लकड़ी,
झट बिट्टू ने पकड़ी,
घोड़ा बना निराला,
असली दिल्ली वाला।
दुलकी चाल दिखाता,
सभी जगह पहुंचाता,
कलकत्ता, पटियाला,
जयपुर देखा-भाला।
दाना, घास न खाता,
सरपट दौड़ा जाता,
बिट्टू कहता, 'आओ'
जाना कहां, बताओ?
पापा, बैठो जमकर,
ले चलता हूं दफ्तर,
मम्मी, चलो घुमा दूं,
चिड़ियाघर दिखला दूं।
जीजी, निकलो घर से,
छोड़ूं तुम्हें मदरसे,
अगर नहीं था जाना,
पहले था बतलाना।
मुझे न भाती झिझिक,
चल भई, घोड़े तिक-तिक।'

—योगेन्द्रकुमार लल्ला

खिलौनोंकी दुनिया (पृष्ठ १५ से आगे)

मेरा चेहरा लाल हो गया। मैं क्रोधसे उस बुड्ढेको देखने लगा। जी चाहा कि इसे ही पकड़ कर घर ले जाऊं और नन्हेरामके सामने छोड़ दूं, फिर देखा जाएगा, जो कुछ होगा। लेकिन संयम रखते हुए मैंने सिर्फ इतना पूछा: "क्यों?"

"इसकी वजह यह है कि आप अपने बच्चे को 'अकेला' रखते हैं। हमउमर संगी-साथी छोटे छोटे बच्चोंके लिए खिलौनोंसे कम नहीं होते। उनके साथ मिलकर वह असली जिन्दगीके छोटे छोटे नाटक खेलता है और उनसे जीना सीखता है। आप उसे सिर्फ एक खिलौना उसका मन बहलानेके लिए देना चाहते हैं। वह उससे कोई नाटक नहीं खेल सकता, कोई दृश्य नहीं बना सकता। इसी लिए वह उसे चपत मार मारकर तोड़ डालता है। आप उसे एक नहीं, बहुतसे खिलौने दीजिए। हर मास कुछ खिलौने खरीदने की आदत डालिए। यहां इंजीनियरीके पूरे सैट हैं। उनसे क्रेनें बनती हैं, जहाज बनते हैं, छोटा छोटा 'माल' जहाजमें चढ़ाया-उतारा जा सकता है। बच्चेको किसी बंदरगाहमें ले जाइए। घरपर वापस आकर उसे यह इंजीनियरिंग सैट दीजिए। देखिए, वह कितना खुश होता है। उसे एक नहीं, अनेक गुड्डे-गुड़िया दीजिए—एक रानी, एक राजा, एक झाड़ू देने वाली, एक पनिहारिन—वगैरा-वगैरा। तब देखिए, वह किस तरह चपत मारना भूलकर उन सबको एक छोटे-मोटे नाटक के ऐक्टर बना देता है।"

हमने दुकानदारसे कहा, "कहीं आप ज्यादा खिलौने बेचनेके लिए हमें बहका तो नहीं रहे?"

दुकानदारने इस तरह हमारी तरफ देखा, मानो हमपर तरस खा रहा हो; बोला, "माफ कीजिए, अभी आपको भी खिलौनोंकी जरूरत है।"

हमें बड़े झेंपे। झेंप मिटानेके लिए बड़ी जोर से ठहाका लगाकर हंसे; बोले, "हः हः हः हमें!"

"जी हां, आपको," दुकानदारने गंभीरता से जवाब दिया। "हमारे यहां शतरंजका बड़ा अच्छा सैट आया है, बड़ा खूबसूरत है। आप उसे ही ले जाइए। शतरंज खेलनेसे बुद्धि तेज होती है और बुद्धि तेज होनेसे आप किसीके बहकाएमें नहीं आएंगे। एक राजकी बात बताऊं? मालूम है, पहले एटम बम किसने बनाया था?"

रूसी बच्चे शतरंजसे बुद्धि पैना रहे हैं

"अमरीकाने," हमने जवाब दिया।

"फिर कुछ ही दिनों बाद रूसने कैसे बना लिया, मालूम?"

"कैसे बना लिया?" हमने आश्चर्यसे पूछा।

"रूसी वैज्ञानिकोंने सब काम-धंधा छोड़कर शतरंज खेलना शुरू कर दिया। बड़े अजीब अजीब बादशाह और वजीर, ऊंट, हाथी, घोड़े, पैदल बनाए उन्होंने। अजी, कोई कोई तो कहता है कि लंबी-चौड़ी बिसात बना कर असली हाथी-ऊंट-घोड़े-पैदल वगैरा खड़े किए और जमकर शतरंज खेली। बस, जो चैम्पियन निकला उसके हाथमें ऐटम पकड़ा दिए गए। बस, उसने एक ही रातमें ऐटम बम बना दिया। उस दिन से आज तक रूसी बच्चे अपनी बुद्धि तेज करनेके लिए शतरंज खेला करते हैं। यकीन न आता हो, तो आपको फोटो दिखाता हूं—" और यह कहकर वह अपनी मेजकी दराजमेंसे टटोल कर एक फोटो निकाल लाया। उसमें रूसी बच्चे दत्तचित्त होकर शतरंज खेल रहे थे।

अब यकीन न आता, तो क्या आता? हमने फौरन अपने मुन्नेके लिए ढेर सारे खिलौने खरीद लिए। हाथी-घोड़े-ऊंट-पालकी-गुड्डा-गुड्डी, अटरम-शटरम। हमारी जेब एकदम खाली हो गई, महीने भरकी तनखा साफ हो गई और जब हम खिलौनोंकी दुनियासे बाहर आए, तो नन्हेरामके खिलौनोंके साथ हमारा भी एक खिलौना उसमें शामिल था—शतरंजका एक खूबसूरत सैट! ●

बंगला कहानी

मेंढकों का धंधा

• जरासंध

भवतोषके जमाईसे बातें चलीं शादीकी दावत के दौरान। मैंने पूछा, "क्या करते हैं आप?"

"जी, बिजनेस करता हूं।"

"काहेका?"

"मेंढकका।"

"मेंढकका!"

"जी, हां। मेंढक नहीं जानते। जो कूद कूदके चलता है, उसका ही। कैसे जानेंगे? बंगाली बिजनेस क्या जानें। बम्बईके डिगबाजीराम धानधानवालाका नाम तो सुना होगा। सिर्फ मेंढकका व्यापार करके ही मालामाल हो गए। मैं तो तीन-चार तरहके—कोला मेंढक, कूना मेंढक कटकट मेंढक और भाउया मेंढकका ही व्यापार करता हूं। चीन, जापान और फ्रांससे एक साथ कारोबार चलता है।"

धन्य हैं भवतोषके जमाई। लड़कीकी जन्म-जन्मान्तरकी तपस्याका फल है, तभी तो ऐसा जमाई मिला। ऐसा-वैसा धंधा नहीं, मेंढकका धंधा—वह भी तीन-चार तरहके!

मेरे बड़े लड़के रामगतिने बी. ए. पास करके नौकरी की तलाशमें तीन महीनेमें आफिस आफिसके चक्कर काटकर दो जोड़ी जूते घिस डाले थे। उससे कहा, "ओ मूर्ख, नौकरी करके क्या करेगा, मेंढकका धंधा कर; दो दिनमें ही मालमाल हो जाएगा।" उसने मेरी बात अनसुनी कर दी। जब किस्मतमें दुःख बदा हो, तो कौन मिटा सकता है? भवतोषके जमाईने ठीक ही कहा कि बंगाली धंधा करना क्या जानें। जानते तो, दो जोड़ी जूते न चटखा डालते!

कई मास बाद आफिससे आते समय डलहौजी स्क्वायरके फुटपाथपर देखा कि एक व्यक्ति भागता हुआ आ रहा है। एक ओर हटते न हटते शरीरके ऊपर ही आ पड़ा—"सो....री, माफ करना, महाशय, बहुत जल्दीमें था....देख नहीं पाया।"

अरे, यह तो हमारे भवतोषके जमाई थे। पूछा, "बाबूजी, अच्छे तो हैं?"

बोले, "अच्छे! इस समय भी अच्छे होनेकी बात पूछते हैं? जानते नहीं, बिल्कुल ही सत्यानाश हो गया! एक जहाज भरकर माल—दस हजार कोला, तेरह हजार कूनो और पच्चीस हजार तीन सौ कटकटे, सब गए, महाशय, सब गए!" बात करते समय भवतोषके जमाई माथा ठोंकने लगे। सुनकर बहुत दुःख हुआ। पूछा, "कैसे गए?"

"जहाज डूब गया। लेकिन मैं ऐसे ही नहीं छोड़ूंगा। उन सब कप्तानोंको निकलवाकर मानूंगा। तिरसठ हजार का केस दायर कर दूंगा। मालूम पड़ जाएगा बच्चूको!"

भवतोषके जमाईने यह कहकर भागनेकी कोशिश की। उन्हें रोककर पूछा, "अब दौड़ते-भागते किधर जा रहे हैं?"

"देखने जाता हूं। वे सब वापस आए हैं। जानते हैं मेंढक कितने देशभक्त जीव होते हैं? विशेषकर यह कूने मेंढक। सब बंगालकी खाड़ीसे तैरकर गंगा सागर में चले आए हैं। अभी आए हैं। अभी टेलीग्राम मिला है। देखने जाएंगे क्या?"

मैं उनके साथ देखने गया। आउटराम घाट जाकर एक नौका की। फोर्टसे आगे कुछ ही दूर जाकर देखा—पानीके ऊपर कुछ काला-काला कूद कूदकर आ रहा था। भवतोषके जमाई चीख उठे, "वे देखिए!" और पास जानेपर देखा, वह दृश्य जन्म-जन्मांतर नहीं भूलेगा। देखा—सारे पानीमें इधरसे लेकर उधर तक पानी दिखता ही नहीं है—सिर्फ काले कूनो मेंढक, हजारों पंक्तियों में कूदते कूदते आ रहे हैं। धन्य हो देशभक्ति! आंखोंमें पानी भर आया।

इधर नावपर भी एक दृश्य चल रहा था। भवतोषके जमाई सीना ठोंक रहे थे, माथा पीट रहे थे, बाल नोच रहे थे और फिर इस प्रकार कूदना शुरू किया कि नाव डूबने

लगी। जान आनेके डरसे कलेजा मुंहको ला दिया। बोला, "बाबूजी, तुम्हारे इन मेंढकोंमें तो देशभक्तिका जोर था, सो तीन सौ मीलसे तैरते चले आए। लेकिन मैं तो तीन हाथ भी नहीं तैर पाऊंगा। मेहरबानी करके जरा धीरे धीरे उछल-कूद करो!"

उन्होंने उछल-कूद रोक दी और बैठकर रोना शुरू कर दिया। वास्तवमें छाती फट जाने वाली बात थी। धंधा भी तो ऐसा-वैसा नहीं, दस हजार कोला, तेरह हजार कूनो और पच्चीस हजार तीन सौ कटकटे!

घर लौटतेमें मन बहुत परेशान हो गया। कुछ दिन पहले ही अखबारमें पढ़ा था: चीनमें भयानक अकाल पड़ा है, रुपयेके चार मेंढक बिकते हैं—वगैरा वगैरा। समझ गया, यह जहाज डूब जानेका ही नतीजा है।

घर पहुंचते ही फिर रामगतिको बुलाया। रोबसे कहा, "यह लो पच्चीस रुपये। रातकी गाड़ीसे विक्रमपुर जाना होगा। इस आषाढ़के महीनेमें नदी-नालों, गड्ढों, तालाबोंमें पानी ही पानी भरा है। बहुतसे भाउया और कोला मेंढक मिलेंगे। अकाल रहते रहते दस हजार तो आने ही चाहिएं।"

रामगति मुंह छोटा करके बोला, "उन्हें खुला कहां? मोकी बात क्या भूल गए आप?"

ओफ ओ! यह बात तो मेरे दिमागसे उतर ही गई थी। रामगतिकी मां थी मेरी पत्नी सुंदरवन देशकी थी। बचपनमें तो वह जलती लकड़ीसे बाघ-शेर तकको मारकर भगा देती थी, लेकिन अब मेंढक देखना तो दूर, नाम सुनते ही डरके मारे दांत बजने लग जाते थे। उस बार तो सीढ़ीके नीचेसे मेंढककी टर्र टर्र सुनते ही एक ऐसी कूद मारी थी कि तीन महीने तक बिस्तरपर ही पड़े रहना पड़ा था।

रामगतिके सोचनेकी बात ही थी। लेकिन उधर चीनमें अकाल पड़ा था। उसने कहा, "यह सब सोचनेसे नहीं चलेगा। जितना भी मुमकिन हो चुपचाप काम करना होगा। लाभ तो देखो; भवतोषके जमाईने बताया था, इस बरसके कोई दिगबाजीराम धानधानवाला सिर्फ कोला मेंढकके धंधेकी दौलतसे मालामाल हो गया है!"

बात इस बार रामगतिके मन भा गई। दूसरे दिन ही वह चला गया और पंद्रह दिन बाद वापस लौटा, तो उसके साथ एक बड़ी गाड़ीभरके चालीस बोरोंमें मेंढक थे। किस्मतकी खूबी थी कि उस दिन उसकी मां अपनी बहनके घर गई थी। रातभरके लिए उन बोरोंको बाहरके कमरेमें रखवा दिया और तय किया, सुबह होते ही जहाज पर चढ़ा आएंगे। स्वयं, रामगति और कुछ नौकरोंको छोड़कर किसी औरको इस बातकी भनक तक न पड़ने दी।

उस रात भवानीपुरमें मेरे एक दोस्तके घर दावत थी। शामको रामगतिकी मां लौट आई।

दावतमें बहुतसे लोग आए थे। रातके बारह बजे उस घरका एक व्यक्ति हांफता हांफता आया और आकर बोला, "हृदय बाबूने टेलीफोन किया है, घरपर भयानक मुसीबत आ गई है।"

"आं, क्या कहा?" खाना ज्योंका त्यों पड़ा रह गया और हम दोनों उठ खड़े हुए। हृदय बाबू हमारे पासके मकान वाले पड़ोसी थे।

एक टैक्सी लेकर चल पड़े। घरके सामने आकर जो देखा, तो सन्देह नहीं रहा। मुसीबत भयानक थी। दो फायर ब्रिगेड खड़े थे, एक लाल पगड़ीधारी पुलिसकी गाड़ी

खड़ी थी। उनके अलावा पांच सौ लोगोंकी भीड़ जमा थी। लगा, जैसे दिलकी धुकधुकी रुक गई हो। भाग्यमें क्या लिखा है, कौन जाने? दरवाजा खुला ही था। बमुश्किल तमाम भीड़को ठेल-ठालकर घरके भीतर घुस पाए। नीचे कोई नहीं था, बस मेंढक ही चारों ओर कूद-फांद मचा रहे थे। सीढ़ियों पर भी वे ही ठसाठस भरे थे। ऊपर सोनेके कमरेके फर्शपर भी उन्हींका बोलबाला था। लेकिन रामगतिकी मां कहां है? रामगतिने चीख चीख-कर मांको पुकारना शुरू किया। उसने बालकनीमेंसे जवाब दिया। भागकर जाकर देखा, वहां पर भी मेंढकोंकी भीड़ मौजूद थी, लेकिन कुछ कम। वह बालकनी की रेलिंगपर चढ़कर जोर जोरसे चीख रही थी। गिर नहीं पड़ी, यही आश्चर्य था। पूछा, "मामला क्या है? नौकर कहां है?"

वह एकबारगी ही सुलग उठी, "यह सब कहांसे आए?"

रामगति उसे अनेक प्रकारसे समझा-बुझाकर मान-मनौव्वल करके नीचे लिवा ले गया। मैंने छज्जेपर खड़े खड़े ही हृदय बाबूके साथ बातें कीं और मामलेको समझनेकी चेष्टा की।

हृदय बाबू बोले, "रातके ग्यारह बजे थे कि अचानक तुम्हारी छतसे एक चीख सुनकर नींद टूट गई। बरामदे में आकर देखा, एक औरत रेलिंगपर चढ़कर पूरे जोरसे चिल्ला रही है। मैंने फायर ब्रिगेडको खबर दी। थानेमें फोन किया। साथ ही आपको भी फोन किया।"

सोनेके कमरेमें वापस आकर चारों ओर देखने पर मामला साफ समझमें आ गया। देखा, लोहेके संदूक का ढक्कन खुला हुआ है। अंदर गहना-जेवर, पैसा-रुपया जो कुछ भी था, अब कुछ भी नहीं है। नौकर खोजने पर भी नहीं मिला। वह बोली, "दरवाजा खोले सो रही थी। अचानक कूद-फांदकी आवाज सुनकर जागी। बहुत से मेंढक देखे, तो डरके मारे भागकर बालकनीमें चली गई। बस आगे कुछ पता नहीं।"

मतलब वह हुआ कि जो हमने रातोंरात मेंढकों के धंधेमें राजा हो जानेका सपना देखा था, उन्हीं मेंढकों के एक-दो बोरोंका मुंह खोल मेरा ही नौकर मुझे फकीर बनाकर चला गया। वह अपनी मालकिनकी कमजोरियों को अच्छी तरह जानता था। चोरियां कई तरहकी सुनी थीं, लेकिन इस तरहकी भी हो सकती है, किसने सोचा था!

नीचे आनेपर दमकलके साहबने पूछा, "क्या मामला है, बाबू? फायर?"

कहा, "नहीं, साहब, फायर नहीं फॉग।"

"डैम!" कहकर वह घंटी टुनटुनाता हुआ चला गया। पुलिसकी गाड़ी भी गई। लेकिन भीड़ थी कि छंटनेका नाम ही नहीं ले रही थी। सोनेके कमरेमें जाकर देखा, दो बोरे अभी भी नहीं खुले थे। उन बोरोंके मुंह भी खोलकर रास्तेपर ठेल दिए। आध-सेर, तीन-पाव वजनके भाउया मेंढक सिरपर पड़ते ही सब 'बाप रे' कहकर भाग चले।

उसके बाद जानकर और क्या होगा। रामगतिको नया जूता ला दिया है। उसे ही पहनकर वह फिर आफिसों के रास्तेपर लैफ्ट-राइट करता घूमा करेगा। ●

(अनुवाद : अवध अनुपम)

बुद्धि की जय

(पृष्ठ ३७ से आगे)

कल रातको सब लोग मिलकर किसानके मचान पर हमला करके उसको खा जाएंगे।

इधर सूरजदासने जब देखा कि भेड़िए अब उसके पीछे पड़ गए हैं, तो उसने गांवभरमें यह खबर फैला दी। इसपर गांवके मुखियाने पंचायत बुलाई। भेड़ियोंसे बचनेके लिए उपाय सोचे जाने लगा। सूरजदासने कहा, "मैंने दो भेड़ियोंको घायल कर दिया है। वे बहुत ही क्रुद्ध होंगे और बहुत मुमकिन है कि दल-बल सहित मुझपर रातको हमला कर दें। इसके लिए हम सबको तैयार होना पड़ेगा। जैसे ही मैं गुहार लगाऊं गांवके पचास नौजवान लाठी-भाला लेकर उन पर टूट पड़ें।"

तीसरी रातको आधी रातके करीब सूरज-दासको लगा कि मचानके नीचे बहुत सारे जान-वर इकट्ठे हैं, लेकिन वह लेटा रहा। तभी मचान हिलने लगी। सूरजदासने कहा, "कौन है?"

एक भेड़िएने दांत निकालकर कहा, "आज तुम नहीं बच सकते। तुमने हमारे दो साथियोंको घायल कर दिया है। तुरंत नीचे उतरो, नहीं तो हम मचान गिरा देंगे।"

सूरजदास उनको बातोंमें फंसाए रखना चाहता था। उसने कहा, "मैं तो नीचे उतरना चाहता हूं, लेकिन क्या सिर्फ मुझसे आप सबकी भूख मिट जाएगी। मैं एक सलाह देता हूं।"

"क्या सलाह है, बोलो?" भेड़ियोंके सरदार ने कहा।

सूरजदास बोला, "मैं गुहार लगाता हूं; कुछ लोग मुझे बचाने आएंगे और आप लोग उनको भी खा लीजिएगा।"

भेड़ियोंने सोचा—चलो अच्छा ही है सबकी भूख मिटेगी। वे राजी हो गए और सूरजदासने गुहार लगाना शुरू कर दिया।

सूरजदासकी आवाज सुनते ही चारों ओर से गांवके नौजवान लाठी-भाले और कुल्हाड़ियां लिये मचानकी ओर लपक पड़े। इधर सूरजदासने जहरीला पाउडर छिड़कना शुरू कर दिया।

पाउडरसे भेड़ियोंकी आंखोंके सामने अंधेरा छा गया और गांवके जवानोंने उन चौदह भेड़ियोंको मारकर गांवको सदाके लिए उनके डरावने हमलोंसे बचा लिया। ●

कच्चे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

(हिन्दीमें शिशु गीतों (नरसरी राइम्स) का चलन बहुत पुराना है। ये बड़े दिलचस्प और चटपटे होते हैं। फिर भी इन्हें जैसा प्रचार-प्रसार मिलना चाहिए था, वैसा नहीं मिल सका। इस अभावकी पूर्तिके लिए हम 'पराग' में प्रायः नएसे नए शिशु गीत प्रकाशित करते हैं। चारसे छह साल तकके बच्चे इन्हें जबानी याद कर सकते हैं। अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इन्हें मजेमें याद कर सकेंगे। इनसे मुहावरेदार हिन्दी सरलतासे उनकी जबान पर चढ़ जाएगी।)

मधुमक्खी

गुन-गुन, गुन-गुन मधुमक्खी,
नन्ही बी अल्ला-रक्खी!
जब तुम ब्याही जाओगी,
हम को नहीं बुलाओगी?

आंधी

आंधी आई तावड़तोड़,
दिए पहाड़ों के सिर फोड़!

फेंके जड़से पेड़ उखाड़,
उखड़े कितने झाड़ी-झाड़।

पर तिनका था एक हठीला,
बोला—'आ तू मुझको तोड़!'

—निरंकारदेव 'सेवक'

संगीत सम्मेलन

कहा कबूतर ने गुटरूं-गू
कोयल बोली कू कू कू कू।
दोनों करते जाते बात,
बाज लगाये बैठा घात।
कांव कांव कर बोला काग,
तीतर गया नींद से जाग।
बुलबुल ने फिर गाया गीत,
तोता सुना रहा संगीत।

विष्णुकांत पाण्डेय

फाउन्टेनपेन और दवात

बोली स्याही की दावात:
"भैया, सुन लो मेरी बात,
मेरा खूब भरा है पेट,
मैं तो बन बैठी हूं सेठ।
मुझ में डुबकी एक लगाओ,
स्याही पी लो, खुशी मनाओ।"

आगे बढ़ा फाउन्टेनपेन,
बोला: "भौट्ठीक है, भैन!
मेरी आफत में है जान,
भूख कर रही है हैरान।
स्याही पी लूं मैं भरपेट,
जाऊंगा टेबिल पर लेट।"

चन्द्रपालसिंह यादव 'मयंक'

ले भागा

एला बेला डोंगा डस!
छोटा छोटा कद्दू कस।
कद्दू में निकले अंगूर,
ले भागा मोटा लंगूर!

लखन

श्री प्रशान्त पुस्तकालय बिजनौर

मां घर आए मेहमानोंसे इधर-उधर दौड़ते अपने बच्चे की प्रशंसा कर रही थी—"अभी यह कुल दो ही वर्षका है, लेकिन इस तरह तो यह पिछले सालसे ही चल रहा है!"

एक मेहमान, जो घंटे भरसे उसी बच्चेकी बड़ाई सुनते सुनते ऊब चुके थे, बोले—"बड़े अजरचकी बात है! आपने उसे कभी बैठाने की कोशिश नहीं की?"

•

एक व्यक्ति अपने चार वर्षीय बालकको गोदमें उठाए स्टेशन मास्टरके पास आया—"सा'ब, दिल्ली जाने वाली गाड़ी कब आएगी?"

मुर्गेकी तरह बांग-सी देकर स्टेशन मास्टर ने उत्तर दिया, "साढ़े तीन बजे।"

दो मिनिट बाद वे दोनों पिता-पुत्र फिर स्टेशन मास्टरके पास आए और वही प्रश्न किया। उसने फिर वही बांग-सी लगा दी, "सुबह, साढ़े तीन बजे।"

जब तीसरी और फिर चौथी बार भी उस व्यक्तिने यही प्रश्न दोहराया, तो स्टेशन मास्टरका पारा चढ़ गया—"क्यों, आप बहरे हैं या झक्की? कितनी बार बताऊं कि गाड़ी साढ़े तीन बजे आएगी?"

बड़ी नम्रतासे उस व्यक्तिने उत्तर दिया—"मैं जानता हूं, सा'ब। लेकिन मेरा बच्चा आपकी आवाज सुनकर प्रसन्न होता है। इसी लिए बार बार पूछना पड़ रहा है।"

•

एक व्यक्तिने अपने नौकरके हाथ एक बोरी शक्कर दुकानदारको इस चिट्ठीके साथ लौटा दी—"कोई भी मिठाई बनानेके लिए इसका उपयोग नहीं हो सकता, क्योंकि इसमें रेत बहुत है और यह रेत भी इतनी कम है कि इसका उपयोग मकान बनानेमें भी नहीं हो सकता!"

•

एक महिला फलोंकी दुकानपर फलवालेसे शिकायत करती हुई बोली, "मैंने अपने लड़केसे सेर भर अंगूर मंगवाए थे। जब घरपर उन्हें तोला, तो वे कुल पौना सेर ही निकले।"

"बिलकुल गलत। मैं अंगूर कम क्यों तोलता?"

"लेकिन मैंने भी तो अंगूर तोले हैं।"

"लेकिन क्या अपने लड़केको भी?"

•

लड़केके स्कूलसे देरसे लौटनेपर मांने कारण पूछा। लड़का बोला, "मास्टरजीने मेरी छुट्टी बंद कर दी थी।" "क्यों?" मांने पूछा।

"मास्टरजीने मुझसे पूछा था कि नौ चौके कितने होते हैं? मैंने कहा ३४, उन्होंने नहीं माना। फिर मैंने ३५ कहा। उन्होंने फिर भी नहीं माना। और, जब मैं आगे बोलने ही जा रहा था कि दूसरे लड़केने कह दिया ३६, और मास्टरजीने उसकी बात मान ली।"

•

एक व्यक्ति चौथी मंजिलपर पहुंचा, तो उसका दम फूल चुका था। सामनेके दफ्तरका दरवाजा खोलकर हांफता हुआ बोला, "डाक्टर, देखो तो सही मैं किस कदर हांफ रहा हूं। मेरा दिल जोरोंसे धड़क रहा है। बस कुल चौथी मंजिल तक चढ़नेमें यह हाल हो गया है—बताइए मैं क्या करूं?"

"काफी कसरत कीजिए, सिगरेट और शराब छोड़ दीजिए, और एक अच्छा-सा चश्मा लगवा लीजिए।"

"चश्मा? लेकिन क्यों?"

"यह इसलिए कि डाक्टर तीसरी मंजिलपर रहता है और यह चौथी है। मैं तो वकील हूं!"

•

बड़ी रात गए पुलिस इन्स्पेक्टरके फोनकी घंटी बज उठी। कोई बेहद घबराई हुई आवाज में बोला—"इन्स्पेक्टर साहब, जल्दी आइए। मेरी कारको चोरोंने पता नहीं क्या कर दिया है। स्टीयरिंग व्हील, डैश बोर्ड—सब उलटपलट..."

"कार कहां है इस समय?"

कुछ पल बाद फोनपर चहकता हुआ स्वर सुनाई दिया: "इन्स्पेक्टर साहब, गाड़ी बिलकुल ठीक है। मैं अंधेरेके कारण पिछली सीटपर बैठ गया था!"

•

कुसुमलता भारद्वाज

डिमटिम खरगोश के किस्से

(पृष्ठ १९ से आगे)

सुनकर उसके करीब आ गई। "लाओ तो, जरा मैं भी चक्खूं।"

डिमटिमने बड़ी खुशीसे मुरमुरे दे दिए। मछलीने मुरमुरे खाकर उससे पूछा, "बड़े मजेदार हैं। कितने पैसे इन सबके?"

डिमटिमने चौंककर कहा, "पैसे? छि: छि:...! मैं सिर्फ तुम्हारे लिए ही लाया हूं। लो, और लो।" उसने झटसे और मुरमुरे दे दिए।

मछली बड़ी खुश हुई और उसके करीब आ कर बैठ गई और बातचीत करने लगी। डिमटिमका मन आसासे खिल उठा।

एकाएक मछलीको कुछ याद आया और वह पुकार उठी, "अरे तोते मियां, तोते मियां, जरा आकर देखो, यह दोस्त क्या लाए हैं?"

तोते मियां, जो एक फुट लंबे थे और झाड़ पर ऊंघ रहे थे, मछलीकी पुकार सुनकर नीचे उड़ आए और डिमटिमके पास जाकर उसे देखने लगे। जैसे ही वह नजदीक आए, डिमटिमने उन्हें पकड़ लिया और चार बार हिलाया और मछलीकी ओर देखा। मछली मर चुकी थी और डिमटिम मिर्चकी तरह लाल बन गया था। उसने खुशीसे तोतेको छोड़ दिया और तालाबके पानीमें अपने आपको देखा, "कितने खूबसूरत पर हैं!" उसने कहा और खुशीसे घरको उड़ चला।

घर पहुंचकर रात भर खुशीके मारे वह सो भी नहीं सका। सूरजके निकलते ही वह घरके बाहर आ बैठा। पर यह क्या? ये कौआ, मैना, बिल्ली, गिलहरी सब हंस क्यों रहे हैं? डिमटिमने मुंह दूसरी ओर मोड़ा। लीजिए, कुत्ते महाराज चले आ रहे हैं। डिमटिम खुशीसे फुदकता हुआ आगे बढ़ा ही था कि....

"हीहीं...हीही..." कुत्ते महाराज हंसने लगे।

"आप क्यों हंस रहे हैं?" डिमटिमने परेशान होकर पूछा।

"हीही...हीही...कैसे विचित्र...हीही दिखते हो। खरगोश...हीही...वह भी लाल पर वाला! राम राम!" और वह हंसते हंसते चला गया।

डिमटिमका सवाल जबानपर ही रह गया। वह फिर घरके पास जाकर बैठ गया और रोने लगा, "काश, मेरे लाल पर न होते!" ●

लट्टू की कहानी

प्यारे बच्चो, तुमने लट्टू और फिरकनी चलानेमें विशेष आनंद लिया होगा और साथ ही किसी अच्छे तमाशेपर इतने अधिक लट्टू हो गए होंगे कि वहांसे हटनेको जी ही न चाहता होगा। पर क्या तुमने कभी यह भी सोचा है कि इस शब्दका संबंध संस्कृत शब्द 'लुठन' (लुढ़कना) से है जो लुढ़कते-पुढ़कते आज 'लट्टू' बन गया। तुम यह तो जानते ही हो कि इसको नचानेके लिए सूत लपेटकर जमीन पर फेंकते हैं। इसको फेंकने की भी एक कला होती है, जिसे नाचते हुए लट्टू को देखकर मोहित हो, हर कोई सीखना चाहता है। इस कलामें निपुण व्यक्ति ही अधिक देर तक लट्टू नचा सकता है जिसको देखने वाला भी मोहित हो जाता है। इसीके आधारपर तो इससे बने मुहावरे 'लट्टू होना' का अर्थ 'मोहित होना' 'आसक्त होना', अथवा 'किसी वस्तुको पानेके लिए विशेष रूपसे लालायित होना' प्रचलित हो गया। अंग्रेजीमें इसको 'टॉप' कहते हैं। 'टॉप की तरह सोना' अंग्रेजीमें प्रचलित मुहावरा है जिसका अर्थ है—'गहरी नींदमें सोना'।

पश्चिमी देशोंमें इसका प्रचार बहुत पुराना है। 'पतंग' का प्रचार पूर्वसे पश्चिममें गया, तो इसके विपरीत 'टॉप' पश्चिमसे पूर्वकी ओर आया है। अनेक प्रकारके 'टॉप' पश्चिमी देशोंमें चलते हैं और आज भी उनके सुधरे हुए रूप प्रचलित हैं। 'ट्वेल्थ नाइट' जैसे ग्रंथोंमें इसकी उपमाएं दी गई हैं। १३ वीं शताब्दीमें फ्रेंच साहित्यमें इसका प्रयोग मिलता है। १४ वीं शताब्दीकी इंगलैंडकी चित्रकलामें भी यह चित्रित है। वैसे ग्रीक और लैटिनमें इसका प्रचलन और भी पुराना है।

यही वह खेल है जो पश्चिमको पूर्वसे मिलाता है। पूर्वमें कोरियन खेलोंमें बर्फपर इसको चलाया जाता है। वहांपर यह मजबूत लकड़ीका बनाया जाता है जिसके मध्यमें एक लोहेकी नोक रहती है, जो बर्फपर जमकर घूमती रहती है। जापान में भी इसका विशेष प्रचार मिलता है। यूरोपसे जावा होता हुआ यह खेल जापान पहुंचा। जावा में ये बांस से बनाए जाते हैं। यह 'टॉप' ही जापान पहुंचते पहुंचते 'टॉक लॉक' हो गया। वहांसे चीन, बर्मा, स्याम, मलेशिया, बोर्नियो, न्यूजीलैंड आदि देशोंमें फैल गया। केंटनमें तो यही लट्टू 'ब्वाइजी गूज' (शोर मचाने वाला हंस) कहलाया।

संक्षेपमें यही रोचक कहानी है इस रोचक और मनमोहक खेलकी।

—कैलाशचंद्र भाटिया

खिलौनों का डिब्बा

पिनचक्कर या घनचक्कर

• *अरुणकुमार*

इस खेलको तुम जो नाम देना चाहो, दे सकते हो—पिनचक्कर या घनचक्कर। यह खेल, खेल खेलमें ही, तुम्हारी परीक्षा ले लेता है—कि तुम कितनी चीजोंके नाम याद रख सकते हो। चिड़ियों के नाम, शहरोंके नाम, जानवरोंके नाम, फूलोंके नाम और साग-सब्जीके नाम। दोसे चार साथी तक इस खेलको खेल सकते हैं।

ठहरो, खेलनेसे पहले तुम्हें एक काम करना होगा। पहले सामनेके पृष्ठपर दिए चौखटेको काट लो। इसके अंदर पिनचक्कर है। चौखटेके पीछे लेई लगाकर किसी गत्तेपर चिपका लो। गत्तेको सूखनेके लिए भारी किताबों के नीचे दबा दो। बारह घंटे बाद निकाल लो और चौखटेको अच्छी तरह कैंचीसे काटकर चौकोर कर लो। चाहो, तो उसकी चारों तरफ रंगीन अबरीकी गोट भी चढ़ा सकते हो।

अब पिनचक्करके केन्द्रपर एक आलपिन गुभोकर सीधा खड़ा कर दो। एक सेफ्टी पिन लो और उसकी पीठके छोटेसे घेरेको इस आलपिनके ऊपर डाल दो, जैसा कि इस पृष्ठके चित्र में दिखाया गया है। अब तुम्हारा खेल तैयार है। अपने एक, दो या तीन साथियोंको खेलने के लिए बुला लो।

खेलनेकी विधि और नियम :

पहला खिलाड़ी एक उंगलीसे सेफ्टी पिन को झटकेके साथ घुमाए। जहां यह पिन रुके वह घर देखो किसका है—चिड़ियोंका, जानवरोंका या और कोई। (अगर दो घरोंको मिलाने वाली किसी रेखापर पिन रुके, तो उन दोनों घरोंमेंसे तुम कोई भी चुनकर अपने साथियोंको बता सकते हो।) अब दुबारा उस पिनको उसी तरह घुमाओ।

अब यह नोट करो कि वह किस अक्षरके घरमें आकर रुका है। (अगर दो घरोंको मिलाने वाली किसी रेखापर पड़े, तो तुम कोई भी अक्षर चुनकर अपने साथियोंको बता सकते हो।) अब जानते हो तुम्हें क्या करना है? मान लो पहला

काका सान्ता क्लॉज (पृष्ठ २३ से आगे)

सफेद मूछ और दाढ़ीके बीच आशीर्वाद और बधाई की मुस्कान खेला करती है। सफेद रंगकी बहुत बड़ी झोली उसके कंधे पर लटकी रहती है। सान्ता क्लॉज इस झोलीमें भरे खिलौनोंको ही घर घर जाकर बांटा करता है।

खिलौनोंके अलावा सान्ता क्लॉज बच्चोंको और भी तरह तरहके उपहार देता है। वह रोते बच्चेको मुस्कानोंका उपहार देता है, रोगी बालकको रोगोंसे छुटकारा दिलानेका आशीर्वाद देता है और भूखे बच्चोंको मिठाईके पैकिट देता है।

इस प्रकार सान्ता क्लॉजके आनेकी, उसकी प्रतीक्षाकी और उसके स्वागतकी यह परंपरा ईसाई परिवारोंमें शताब्दियोंसे चली आ रही है। यह पात्र कल्पना-पात्र होते हुए भी इतना सजीव हो गया है कि योरोप, अमरीका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंडके साथ साथ संसारके और भी अनेक स्थानोंमें, जहांपर ईसाई बसे हुए हैं, बालकोंके मनोरंजनके लिए इस प्रकारके वस्त्र और वस्तुओंको इकट्ठा करके, सान्ता क्लॉजके रूपके अनगिनती पात्र प्रति वर्ष बालकोंके पलगों के पास आते हैं और खिलौने और मिठाई देकर उन्हें निहाल कर जाते हैं।

बड़े दिनके आनेसे पहले बड़े बड़े स्टोरों, खिलौनोंकी दुकानों, चाकलेट, टॉफी बेचने वालों की दुकानोंके शो-केसोंमें क्रिसमस ट्रीके साथ सान्ता क्लॉजका पुतला भी सजाया जाता है। जैसे जैसे समय आगे बढ़ रहा है, वैसे वैसे यह पात्र और भी लोकप्रिय होता जा रहा है।

योरोप और अमरीकाकी सरकारें इस बातका विशेष ध्यान रखती हैं कि सान्ता क्लॉज किसे बनाया जाए। इसके लिए समाचार पत्रोंमें विज्ञापन दिए जाते हैं कि ऐसे लोग अपने चित्र भेजें, जो सान्ता क्लॉजके मेक-अपमें फब सकें। यह छानबीन वहांपर कई महीने पहले आरंभ हो जाती है। ऐसा भी कहा जाता है कि सान्ता क्लॉजका अभिनय करने वाले आदमीको प्रेम, सादगी, पवित्रताकी मूर्ति होना चाहिए। अमरीकाके मोइन्स नामक नगरमें सान्ता क्लॉज का अभिनय करने वाले आदमीको बड़े दिनके आनेसे पहले ही इस बातकी शिक्षा दी जाती है कि वह दाढ़ी-मूछ लगाकर हाथमें जलती हुई मोमबत्ती लेकर बर्फसे ढकी सड़कों, छतों, खपरैलों और चिमनियोंपर चल सके। जो इन नियमोंका पालन नहीं करता, उसे सजा भी दी जाती है। वहां पर इन दिनों अगर कहीं आग लग जाए या मोमबत्तीकी लौसे सान्ता क्लॉज की दाढ़ी-मूछ या कपड़े जल जाएं, तो उसे अपशकुनके रूपमें लिया जाता है।

अमरीकाके विकास विभाग और आरोग्य विभागके अधिकारी इस बातका विशेष ध्यान रखते हैं कि सान्ता क्लॉज बनने वाला मनुष्य किसी प्रकारके रोगसे ग्रस्त न हो। खास तौरसे छूतके रोगीको इस पात्रके अभिनयके लिए कभी नहीं चुना जाता। वहां बड़े बड़े स्टोरोंके मालिक तो अपने आप ही ऐसे आदमियोंको पैसे देकर बड़े दिन और नव वर्षके त्योहारके दिनोंमें अपने यहां रख लेते हैं, जो सान्ता क्लॉजकी नकल करके बच्चों का मनोरंजन कर सकें।

कुछ दिन पहले न्यूयार्कमें सान्ता क्लॉज बनने वाले लगभग बीस कलाकारोंको सरकारी अधिकारियोंने लहसुन खानेसे इसलिए रोका था, ताकि लहसुनकी दुर्गंधसे नन्हे-मुन्ने बालकों को परेशानी न हो।

आजकल तो अमरीकामें काका सान्ता क्लॉज बनने वाले कलाकारोंको खास तौरसे बड़े दिन के त्योहारके लिए शिक्षा देकर तैयार किया जाता है और यह तैयारी उसी प्रकारसे होती है, जैसी कि ज्ञान-विज्ञान आदिके स्नातक तैयार किए जाते समय होती है। वहां पर इस प्रकारकी विशेष शिक्षा देनेके लिए संस्थाएं भी खोली गई हैं और स्नातकोंको उपाधि भी दी जाती है। इतना ही नहीं, विभिन्न स्थानों और दुकानोंपर सान्ता क्लॉज बनने वाले विभिन्न कलाकारोंमें, जो भी अपने कामको सबसे अच्छे ढंगसे निभाता है, उसे पुरस्कार भी दिया जाता है। इंडियाना नामक प्रदेशमें इस प्रकारका कालिज भी है, जहां सान्ता क्लॉज बनने वाले कलाकारोंको वेष-भूषा मेक-अप, व्यवहार, सरलता, स्नेह और बालकोंके साथ व्यवहार-शैली की शिक्षा दी जाती है। ●

कहानी

मिन्नीजी स्कूल पहुंचीं

• जयकरण बिच्छल

मिन्नीको स्कूल जानेका बड़ा शौक था। एक दिन वह चुपकेसे चुन्नू-मुन्नूके पीछे लग ली और स्कूल जा पहुंची।

मिन्नीको यह तो मालूम नहीं था कि किस कक्षामें बैठे, इसलिए सामने जो कक्षा मिली, उसीमें जा पहुंची। अभी बच्चे कक्षामें नहीं आए थे। तभी अध्यापिकाजी कक्षामें जा पहुंचीं। देखा कि एक नन्ही बच्ची उनकी कुर्सीपर बैठी है। वह उसके पास पहुंचीं और बोलीं, "नमस्ते जी!"

"नमस्ते!" मिन्नीने कहा।

"आप यहां किस लिए आई हैं?"

"खेलने!"

"लेकिन यह तो स्कूल है। यहां पढ़ाई होती है, खेल नहीं।"

"मुझे खेलके स्कूलमें भेज दो," मिन्नीने कहा।

"अच्छा, थोड़ा-सा पढ़ लो, फिर खेलके स्कूलमें चली जाना," अध्यापिकाजीने कहा। "कुछ गिनती-पहाड़े आते हैं?"

"आते हैं," मिन्नीजी बोलीं।

"सुनाओ।"

मिन्नीने सुनाना शुरू किया :

"एक एकम एक, दो दूनी बनिया।
तीन दूनी हल्दी, चार दूनी धनिया।
पांच दूनी अम्मी, छह दूनी भाई।
सात दूनी बाबूजी, आठ दूनी मिठाई।
नौ दूनी धम्मक-धम्मा, दस दूनी पिटाई!"

"वाह, वाह! तुम तो बहुत होशियार हो। कुछ पढ़ भी लेती हो?"

"हां, बाबूजीकी सब किताबें पढ़ लेती हूं!"

"अच्छा!" अध्यापिकाजीने मुस्कराते हुए कहा और अपने बैगसे अंग्रेजीकी एक मोटी-सी किताब देकर बोलीं—"पढ़ो तो।"

मिन्नीने किताब ले ली। उसे उल्टा पकड़ कर खोला और झूम-झूमकर पढ़ना शुरू किया :

"अ माने अम्मा। अम्मा हमको बहुत मारती हैं। अम्मा माने गंदी। ब माने बाबूजी। बाबूजी अम्माको डांटते हैं। बाबूजी गंदे। म माने मिन्नी। मिन्नी अच्छी लड़की है। क माने कबूतर, ग माने गधा। श्याम भैया गधा. . . ."

"वाह, वाह! कोई गाना भी आता है तुम्हें?"

"आता है!" मिन्नीजी बोलीं।

तब तक कुछ बच्चे कक्षाके दरवाजेपर जमा हो गए थे। मिन्नीने कुर्सी परसे उतर कर गा-गाकर नाचना शुरू कर दिया :

"इच्चक दाना बिच्चक दाना
मुझको भूख लगी है, जल्दी दे दो खाना।
लड्डूको छिपा दो बक्सेमें
बुहोंकी नजर न लगे—चश्मे-बद्दूर!
ये दुनिया गोल है, अंदरसे पोल है,
खाकरके देखो, बाबू,
लड्डू गोलमगोल है—चश्मे बद्दूर!"

मिन्नीजीने फ्राक उठाकर नाचना शुरू किया, तो सब बच्चोंने ताली बजा दी। मिन्नीजीकी समझमें न आया कि क्या बात है। गर्दन झुकाकर नीचे देखा, तो रुआंसी हो गईं।

तभी अध्यापिकाजीने उसे गोदमें उठा लिया और उसके मुंहमें एक टाफी रखकर उसे पुचकारा। फिर बोलीं, "मिन्नीजी, आप तो एम. ए. पास हैं। बहुत पढ़ती हैं, बहुत अच्छा गाती हैं। लेकिन स्कूल आया कीजिए, तो जांघिया पहनकर। और आपके लिए हमारे स्कूलमें अलग क्लास है—बेबी क्लास। कल उसमें बैठिएगा।"

मिन्नी हुमकती और टाफी चूसती घर लौट आईं। अगले दिन फिर स्कूल जानेके लिए। ●

दिलीप और साथियों का गोली खेल